RAJHIN/2016/70516

Bhilwara/171/2026-2028

सच्चाई से रूबरू

smarthalchal.com

स्मार्ट हलचल

वर्षः 11 अंकः 150 | जयपुर, भीलवाड़ा चित्तौड़गढ़ | रविवार, 29 नवम्बर 2026 | मूल्यः 4 रुपए | पृष्ठः 08

संक्षिप्त समाचार

रावण 'मैं और मेरा' में अटका रहा, राम सबके हो गए

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि रावण अहंकारी था, जबकि राम करुणा के प्रतीक थे। रावण मैं और मेरा से आगे नहीं जा पाया। जबकि राम सबके हो गए। यही अहंकार और करुणा के बीच का फर्क है। भागवत दिल्ली में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी की किताब 'करुणानायक राम' के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। समारोह में भूटान के शाही परिवार की राजमाता और राजकुमारी भी मौजूद थीं। देश और दुनिया की लगभग हर समस्या की जड़ करुणा का अभाव है। चाहे समस्या वर्तमान की हो, अतीत की या भविष्य की, उसका समाधान करुणा और संवेदनशीलता से ही संभव है। नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के विचार करुणा का वैश्वीकरण की आज पूरी दुनिया को जरूरत है। करुणा केवल किसी एक व्यक्ति या देश तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरी मानवता में होनी चाहिए। रावण अहंकार का प्रतीक था, जबकि भगवान राम करुणा के।



नया योद्धा आईएनएस विंध्यगिरि नेवी में शामिल

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय नौसेना को प्रोजेक्ट 17ए का सातवां और आखिरी युद्धपोत आईएनएस विंध्यगिरि सौंप दिया गया है। शुक्रवार को कोलकाता के गार्डनरीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड में इसकी डिलीवरी



हुई। इसके साथ ही नीलगिरि क्लास के सभी सात युद्धपोत नौसेना को मिल गए हैं। करीब 45 हजार करोड़ रुपए की इस परियोजना के तहत 23 महीने में सभी युद्धपोत सौंपे गए हैं। आईएनएस विंध्यगिरि ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल और बराक-8 एंटी-एयरक्राफ्ट मिसाइल से लैस है। इसमें स्टील्थ तकनीक, आधुनिक रडार और अत्याधुनिक युद्ध प्रबंधन प्रणाली लगाई गई है। इससे यह दुश्मन के जहाजों, लड़ाकू विमानों और पनडुब्बियों से मुकाबला कर सकता है। युद्धपोत के करीब 75 फीसदी उपकरण और तकनीक स्वदेशी हैं। इसके निर्माण में 200 से ज्यादा विमान कंपनियों ने हिस्सा लिया।

ऑपरेशन सिंदूर भविष्य के युद्ध का टेम्प्लेटः सीडीएस

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ एनएस राजा सुब्रमणि ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ही भविष्य के युद्ध का टेम्प्लेट है। उसी तरह के युद्ध अब आगे लड़े जाएंगे, जिसमें आर्मी, नेवी और एयरफोर्स एक साथ, एक योजना पर, एक समय पर काम करेंगी। सीडीएस ने दिल्ली में कहा कि अब युद्ध सिर्फ सीमा पर नहीं लड़ा जाएगा। युद्ध जमीन, आसमान, समुद्र, आकाश, संचार



तंत्र और दिमाग सब जगह एक साथ लड़ा जाएगा। जो देश इन सबको एक साथ जोड़कर सबसे तेज चलेगा, वही जीतेगा। उन्होंने कहा कि अब अकेले हथियार किसी काम के नहीं हैं। जरूरत जुड़ी हुई व्यवस्था की है। एक सैटेलाइट निशाना देखेगा, दूसरा सिस्टम उसे पक्का करेगा, कम्युनिकेशन सिस्टम जानकारी देगा और जमीन पर, हवा में, समुद्र में या समुद्र के नीचे, कोई भी हथियार आखिर में वार करेगा। युद्ध का चरित्र मुख्य रूप से बदलती टेक्नोलॉजी की वजह से बदल रहा है। टेक्नोलॉजी में बढ़त सिर्फ अस्थायी है, हमें लगातार सुधार करते रहना होगा। आज जो हथियार सबसे आधुनिक है, वो कल पुराना हो जाएगा।

जीत सुप्रीम फटकार के बाद दीपथून में जल गया दीपक

सीआरपीएफ के पहरे, पूर्व जज की निगरानी में रस्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद तमिलनाडु के मदुरै की तिरुपरंकुंद्रम पहाड़ी पर बने दीपस्तंभ पर आज शाम 5 बजे दीप जलाया गया।

इस दौरान श्रद्धालु भगवान मुरुगा की जय-जयकार करते रहे। वेत्रिवेल मुरुगानुक्कु अरोहारा के मंत्रों के बीच दीप जलाया गया। इस दौरान सिर्फ 50 लोगों को पहाड़ी पर जाने की इजाजत मिली। सीआरपीएफ ने पहाड़ी की सुरक्षा अपने हाथ में ले ली है। पहाड़ की नीचे बड़ी संख्या में श्रद्धालु और स्थानीय लोग जुटे। यह पूरी प्रक्रिया रिटायर्ड हाई कोर्ट जज जस्टिस एस वैद्यनाथन और जस्टिस वी



पार्थिबन की मौजूदगी में संपन्न हुई।

सुप्रीम कोर्ट ने 24 नवंबर को दीप प्रज्जवलित नहीं किए जाने पर कड़ा रुख अपनाया था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने दो रिटायर्ड जजों को मंदिर का एडमिनिस्ट्रेशन संभालने के लिए नियुक्त किया था।

दीप जलने पर कुछ भक्त हुए इमोशन

थिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी पर स्थिति दीपाथून (पत्थर के स्तंभ) पर जब कार्तिगई दीपम को प्रज्जवलित किया गया। तो लोगों ने जश्न मनाया। इस मौके पर कुछ लोग भावुक हो गए। महिलाओं ने फूल बरसाए। एक महिला भावुक हो गए। दीप प्रज्जवलित होने पर हाथ जोड़कर भगवान मुरुगन का अभिवादन किया। मंदिर के प्रशासन को संभालने के लिए हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश, जस्टिस एस. वैद्यनाथन और जस्टिस वी. पार्थिबन को रिसीवर (प्रशासक) के रूप में नियुक्त किया गया। कार्तिगई दीपम के प्रज्वलन के वक्त ढोल-नगाड़े बजाए गए। इस मौके पर लोगों की आंखों में खुशी के आंसू नजर आए। लोगों ने इस पर्व को खूब धूमधाम से मनाया।

उत्तराखंड के रिखणीखाल में भीषण सड़क हादसा

छह महिलाओं समेत 7 की मौत

पौड़ी (एजेंसी)। उत्तराखंड से एक दुखद खबर सामने आ रही है। पौड़ी जिले के कोटद्वार के रिखणीखाल ब्लॉक में सड़क हादसे में सात लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि हादसे में जान गंवाने वालों में एक ही स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएं शामिल थी। जो कि बैंक से कुछ काम निपटाकर लौट रही थीं। प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंची हैं और रेस्क्यू कार्य चलाया जा रहा है। हादसा कोटद्वार रिखणीखाल में



रिखणीखाल-सतपुली मोटर मार्ग पर कलवाड़ी गांव के पास हुआ। एक वाहन अनियंत्रित होकर करीब 100 मीटर नीचे खाई में जा गिरी। हादसे में वाहन चालक समेत छह महिलाओं की मौत हो गई। वाहन में सवार महिलाएं स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थीं और बैंक का काम निपटाकर अपने गांव लौट रही थीं।

पीएम चीन की तरह सत्ता अपने हाथ में लेना चाहते हैं

- **कांग्रेस नाराज,** परिसीमन बिल का करेंगे विरोधः खरगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को कहा कि परिसीमन लोकतंत्र के लिए खतरा है। भाजपा पूरी सत्ता हाथ में लेने की कोशिश कर रही है। यह हमें स्वीकार नहीं है। जैसे चीन में हाथ उठाते हैं, वैसे ही भारत में करना चाहते हैं कि हाथ उठाकर बहुमत लेकर लोकतंत्र खत्म करेंगे। परिसीमन बिल को लेकर इंडिया ब्लॉक के सांसदों ने शनिवार को सोनिया गांधी के आवास पर मीटिंग की। खड़गे बोले- नए परिसीमन से एससी-एसटी की सीटें बढ़ना चाहिए। सरकार जो बिल ला रही है, उसमें इसका प्रावधान नहीं है। नया बिल जो आने वाला है, उसके बारे में उन्होंने कुछ नहीं बताया। खड़गे ने कहा- दागी चुनाव आयोग, जिसने 10 करोड़ से ज्यादा लोगों को वोटर लिस्ट से हटाया। उसे ही परिसीमन की जिम्मेदारी दी जा रही है। यह हमें स्वीकार नहीं है। ज्ञानेश कुमार अपराधी है। उनके नेतृत्व में यह सब होगा तो सब गड़बड़ होगा।



नारी शक्ति को सशक्त बनाने का संकल्प अटल

पीएम बोले-महिला आरक्षण के रास्ते की हर बाधा करेंगे दूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के आगामी विशेष सत्र से ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिला सशक्तिकरण और महिला आरक्षण बिल को लेकर सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई है। पीएम मोदी ने कहा है कि देश की नारी शक्ति को सशक्त बनाने का उनका संकल्प पूरी तरह से अटल है। महिला आरक्षण विधेयक के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वीडियो जारी कर कहा कि सरकार ने देश की महिलाओं से जो वादा किया था, वह उसे पूरा करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।



- **महिला आरक्षण बिल में संशोधन की तैयारी-** सरकार पिछले कानून में संशोधन करने पर विचार कर रही है, जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना है। ये प्रस्तावित बदलाव अप्रैल में लोकसभा में संविधान विधेयक 2026 के पारित न हो पाने के बाद लाए जा रहे हैं। पिछले विधेयक में महिला आरक्षण को लागू करने की प्रक्रिया को परिसीमन से जोड़ा गया था और लोकसभा की मौजूदा 543 सीटों को बढ़ाकर अधिकतम 850 करने का प्रस्ताव रखा गया था।

परिसीमन विधेयक पर केंद्र की नई पहल

प्रधानमंत्री का यह आश्वासन डिलिमिटेशन विधेयक को आगे बढ़ाने के केंद्र सरकार के नए प्रयासों के बीच आया है। केंद्र ने 2023 में पारित हुए महिला आरक्षण कानून को परिसीमन के साथ जोड़ा है। सरकार का कहना है कि 2029 के लोकसभा चुनावों में निर्वाचन क्षेत्रों के नए सिरे से परिसीमन के बाद बनने वाली बड़ी संसद में महिलाओं को 33 प्रतिशत सीटें मिलेंगी।

स्टालिन-पवार, जगनमोहन के 34 सांसदों का समर्थन

उधर, सरकार को परिसीमन बिल पास कराने की राह आसान होती जा रही है। शरद पवार की एनसीपी और आंध्र प्रदेश के पूर्व सीएम जगनमोहन रेड्डी की वायएसआर के बाद शनिवार को एमके स्टालिन की पार्टी डीएमके ने समर्थन का ऐलान किया है। तीनों के 34 सांसद हैं।

एआई से 2027 में कोरोना से ज्यादा मौतों का खतरा

- यह बेकाबू हो सकता है, अपराधियों के हाथ लग सकते हैं जानलेवा वायरस

बर्कले (एजेंसी)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई कोरोना से भी बड़ा संकट खड़ा कर सकता है। जीपीटी-5 की सुरक्षा जांच कर चुके वैज्ञानिक निकोला युर्कोविच ने एआई के बेकाबू होने की आशंका जताई है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि एआई की मदद से अपराधियों के हाथ जैविक हथियार बनाने की तकनीक लग सकती है। इससे 2027 में लाखों मौतें हो सकती हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, कोरोना महामारी से दुनिया भर में 71 लाख से ज्यादा मौतें दर्ज हुई



थीं। हालांकि, वैज्ञानिकों का अनुमान है कि असल संख्या 2 करोड़ से ज्यादा हो सकती है। निकोला ने ऑनलाइन बैंकिंग ठप होने की भी आशंका जताई है। उन्होंने लोगों से घर में 14 दिन का राशन-पानी और नकदी रखने को कहा है। निकोला के मुताबिक, एआई पर इंसानों का कंट्रोल कमजोर पड़ रहा है। इस साल एआई ने कंपनियों के कंप्यूटर सिस्टम में सेंध लगाकर आर्थिक नुकसान पहुंचाया है।

2030 के अंत तक इंसानियत खत्म होने का खतरा

युर्कोविच के मुताबिक, एआई के विकास की रफ्तार नहीं रुकी तो 2030 के अंत तक इंसानियत के खत्म होने या एआई से कंट्रोल खोने का खतरा 50 फीसदी है। अगर इससे बच भी गए तो अगले 10 साल में मौजूदा ज्यादातर नौकरियां खत्म हो सकती हैं। विशेषज्ञों को डर है कि एआई भविष्य में खुद नए हथियार बना सकता है। वह ड्रोन और रोबोट की मदद से जरूरी ठिकानों पर कब्जा करने की कोशिश कर सकता है। एआई का इस्तेमाल खतरनाक जैविक हथियार बनाने में भी हो सकता है। एआई सुरक्षा विशेषज्ञ और एलाइनमेंट रिसर्च सेंटर के संस्थापक पॉल क्रिस्टियानो के मुताबिक, अगर एआई अपने फैसले खुद लेने लगा तो उसे रोकना मुश्किल हो जाएगा।

सर्दियों से पहले दोनों देश तेजी से कर रहे हैं सैन्य तैयारी

सीमा पर शांति के लिए भारत और चीन फिर करेंगे बात

बीजिंग/नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन और भारत ने सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए नये सिरे से बातचीत की है। हालांकि बातचीत के बीच दोनों ही देश सीमा पर अपनी सैन्य तैयारियों और लॉजिस्टिक सपोर्ट को भी तेजी से बढ़ा रहे हैं। चीनी रक्षा मंत्रालय ने गुरुवार को बताया है कि बॉर्डर पर शांति बनाए रखने के लिए दोनों देशों के डिप्लोमेट्स और मिलिट्री अधिकारियों के बीच संपर्क बना हुआ है। चीनी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता चेन शी ने कहा फिलहाल चीन-भारत सीमा क्षेत्र काफी हद तक स्थिर है।

चीन ने एलएसी की वर्तमान स्थिति को 'स्थिर' बताया



दोनों पक्ष राजनयिक और सैन्य माध्यमों जैसे कि कोर कमांडर स्तर की बातचीत के जरिए संपर्क बनाए हुए हैं ताकि दोनों पक्षों के बीच बनी सहमति को लागू किया जा सके और सीमावर्ती इलाकों में शांति और स्थिरता सुनिश्चित की जा सके। साउथ चायना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक चीनी रक्षा मंत्रालय ने बताया है कि दोनों पक्षों के बीच एलएसी के पूर्वी सेक्टर में सैन्य कमांडरों के बीच बातचीत का एक नया दौर पूरा किया गया है। इस क्षेत्र में इस तरह की पहली बातचीत सितंबर में हुई थी। वहीं अखबार ने बताया है कि यह बैठक 8 नवंबर को शुरू हुई और एक छोटे ब्रेक के बाद करीब 10 दिनों तक ये बैठक चली। रिपोर्ट के मुताबिक दोनों देशों के अधिकारियों के बीच ये बैठक सौहार्द्रपूर्ण माहौल में हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक इस बातचीत का मकसद कामकाज के नियम तय करना है।

सर्दियों से पहले सीमा पर तेजी से सैन्य तैयारियां

भारत और चीन, दोनों ही देश सर्दियों के आने से पहले एलएसी पर तेजी से सैन्य तैयारियों को बढ़ा रहे हैं। भारतीय सेना लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में बिना रुकावट सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक सड़कों और सुरंगों पर काम कर रही है। अरुणाचल में सेला सुरंग और अरुणाचल फ्रंटियर हाईवे और लद्दाख में निम्मू-पदम-दारचा मार्ग, जोजिला और शिंकुन ला सुरंगों के जरिए बर्फबारी के दौरान भी सेना की आवाजाही और रसद आपूर्ति को सुरक्षित बनाया जा रहा है। भारतीय सेना ने 9 हजार से 18000 फीट की ऊंचाई पर माइनस 45 डिग्री तापमान से निपटने के लिए पहले से ही तैयारियां करती रही हैं। अपनी सीमा चौकियों को बहुत पहले मौसन के अनुकूल कर लिया है।

डिलिमिटेशन महिला आरक्षित सीटें भी चुनेगा, सुप्रीम जज होंगे अध्यक्ष

कहां, कितनी सीटें बढ़ेंगी, परिसीमन आयोग करेगा तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार सोमवार को लोकसभा में संविधान संशोधन विधेयक पेश करेगी। इसके तहत लोकसभा और सभी राज्यों-केंद्रशासित

देश के हर राज्य से 10 सहयोगी सदस्य मिलेंगे, है तैयारी

प्रदेशों की विधानसभा सीटों की संख्या 50 फीसदी बढ़ाने का प्रस्ताव है। किस राज्य में कितनी लोकसभा और विधानसभा सीटें बढ़ेंगी, यह तय करने की जिम्मेदारी परिसीमन आयोग की होगी। आयोग महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षित सीटों की पहचान भी करेगा। आयोग में तीन मुख्य सदस्य होंगे। इसकी अध्यक्षता



सुप्रीम कोर्ट के मौजूदा या रिटायर्ड जज करेंगे। इसके अलावा हर राज्य से 10 सहयोगी सदस्य नामित किए जाएंगे। मुख्य चुनाव आयुक्त या उनके नामित चुनाव आयुक्त और संबंधित राज्य के राज्य निर्वाचन आयुक्त आयोग के अन्य दो सदस्य होंगे।

हर राज्य से 5 सांसद और 5 विधायक सहयोगी सदस्य

प्रत्येक राज्य से पांच लोकसभा सांसदों को लोकसभा अध्यक्ष नामित करेंगे। पांच विधायकों को संबंधित राज्य विधानसभा के अध्यक्ष नामित करेंगे। ये सहयोगी सदस्य आयोग की बैठकों और चर्चाओं में हिस्सा ले सकेंगे, लेकिन उन्हें मतदान करने या आयोग के फैसलों पर हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं होगा। परिसीमन की प्रक्रिया के लिए आयोग रजिस्ट्रार जनरल, जनगणना आयुक्त और अन्य अफसर निर्णय ले सकेगा।

महिलाओं को 15 साल के लिए मिलेगा आरक्षण

महिलाओं के लिए आरक्षण 2023 के संविधान संशोधन के लागू होने की तारीख से 15 साल तक रहेगा। संसद कानून बनाकर इसकी अवधि बढ़ा सकेगी। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें संबंधित वर्गों के लिए आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों के भीतर तय की जाएंगी। आरक्षित सीटों का रोटेशन किस प्राधिकरण और किस तरीके से होगा, यह संसद तय करेगी।

नमो घाट पर दिखा उत्तर और दक्षिण की संस्कृति का संगम

- काशी-तमिल संगमम का उपराष्ट्रपति और सीएम योगी ने किया उद्घाटन

वाराणसी (एजेंसी)। काशी में काशी-तमिल संगमम के पांचवें संस्करण का शुभारंभ शनिवार को हुआ। नमो घाट पर कार्यक्रम की शुरुआत हुई है। 12 दिसंबर तक चलने वाले आयोजन में तमिलनाडु से सात समूहों में 1750 प्रतिनिधि आएंगे। इस मौके पर सीएम योगी ने कहा कि काशी-तमिल संगमम एक भारत श्रेष्ठ भारत का ही उदाहरण हैं। कहा कि 5वें संस्करण की थीम तिरुक्कुरल पयिलोम-तिरुक्कुरल अभ्यास करें रखी गई है। पिछली बार उत्तर भारत ने तमिल सीखी थी। इस बार तमिल के जीवन मूल्यों से जुड़ने का अवसर हमें मिल रहा है। उन्होंने कहा कि तिरुक्कुरल के तीन खंड- धर्म, अर्थ और काम हैं। ये ही भारतीय सनातन के मूल आधार हैं।



खजूरी में दो दिन तक सियासी घमासान

प्रधान चुनाव में भाजपा की आशा देवी जीतीं, उपप्रधान पद पर कांग्रेस के हेमराज रेगर का कब्जा

प्रधान चुनाव में वोटिंग को लेकर विवाद के बाद धीरज गुर्जर ने समर्थकों के बीच किया संबोधन, उपप्रधान चुनाव में 9-6 से कांग्रेस की जीत; जीत के बाद भी समर्थकों को किया संबोधित, दूसरे दिन एसपी-विधायक के बीच तीखी बहस

स्मार्ट हलचल/अलकेश पारीक







जहाजपुर । खजूरी पंचायत समिति के चुनाव में दो दिनों तक राजनीतिक सरगर्मी और हंगामे का दौर जारी रहा। शुक्रवार को प्रधान चुनाव के दौरान कांग्रेस सदस्यों की वोटिंग को लेकर विवाद हुआ। भाजपा की आशा देवी मीणा प्रधान निर्वाचित हुईं। इसके बाद कांग्रेस नेता धीरज गुर्जर के समर्थक बड़ी संख्या में एकत्रित हुए। धीरज गुर्जर ने समर्थकों के बीच संबोधन दिया। वहीं शनिवार को उपप्रधान चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी हेमराज रेगर ने 9 वोट हासिल कर निर्दलीय प्रत्याशी मनीषा मीणा को 3 वोटों से हराया। जीत के बाद धीरज गुर्जर ने फिर समर्थकों को संबोधित किया। शुक्रवार को प्रधान चुनाव के दौरान खजूरी में राजनीतिक विवाद उस समय बढ़ गया, जब कांग्रेस सदस्यों की वोटिंग को लेकर आरोप-प्रत्यारोप शुरू हुए। आरोप लगे कि कांग्रेस के निर्वाचित सदस्यों को अपने प्रत्याशी के पक्ष में मतदान नहीं करने दिया गया। इसी बीच भाजपा की आशा देवी मीणा प्रधान निर्वाचित हुईं। चुनाव परिणाम के बाद धीरज गुर्जर के समर्थक बड़ी संख्या में जमा हो गए। बस के शीशे तोड़े जाने की घटना के बाद सड़क पर भी हंगामा हुआ। पुलिस प्रशासन की मौजूदगी में काफी देर तक प्रदर्शन चलता रहा।

उपप्रधान चुनाव में कांग्रेस ने पलटा समीकरण

शनिवार को उपप्रधान चुनाव के लिए सुबह 10 बजे नामांकन प्रक्रिया शुरू हुई। कांग्रेस की ओर से हेमराज रेगर ने नामांकन दाखिल किया, जबकि कांग्रेस से निर्वाचित सदस्य मनीषा मीणा निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरीं। भाजपा की ओर से मनीषा मीणा को समर्थन दिया गया। मतदान में कांग्रेस प्रत्याशी हेमराज रेगर को 9 और निर्दलीय प्रत्याशी मनीषा मीणा को 6 वोट मिले। इस तरह हेमराज रेगर ने 3 मतों से जीत दर्ज कर उपप्रधान पद पर कब्जा किया। जीत के बाद कांग्रेस नेता धीरज गुर्जर ने समर्थकों को संबोधित किया। इस दौरान समर्थकों में उत्साह देखने को मिला। उन्होंने चुनाव परिणाम के बाद कार्यकर्ताओं के बीच अपनी बात रखी। समर्थकों की भीड़ और संबोधन के बीच खजूरी का राजनीतिक माहौल एक बार फिर चर्चा में आ गया।

एस्कॉर्ट को लेकर एसपी-विधायक में बहस

उपप्रधान चुनाव के दौरान करीब 11 बजे जिला पुलिस अधीक्षक सागर राणा भी खजूरी पहुंचे। इसी दौरान नामांकन दाखिल कर लौट रहे कांग्रेस सदस्यों की गाड़ी को विधायक गोपीचंद मीणा और उनके समर्थकों ने रोक लिया। विधायक ने बाहरी लोगों को पुलिस एस्कॉर्ट उपलब्ध कराने पर सवाल उठाए। मामले की जानकारी मिलने पर एसपी मौके पर पहुंचे। इसके बाद विधायक और एसपी के बीच तीखी बहस हुई। इस दौरान एसपी ने विधायक से कहा कि आप जनप्रतिनिधि हैं, गाली-गलौज मत कीजिए। वहीं विधायक ने सफाई देते हुए कहा कि उन्होंने एसपी या पुलिस प्रशासन को कोई अपशब्द नहीं कहे। उनका सवाल बाहर से आए लोगों को एस्कॉर्ट उपलब्ध कराने को लेकर था।

दो दिन, दो चुनाव और लगातार विवाद

खजूरी पंचायत समिति के चुनाव में शुक्रवार को प्रधान पद और शनिवार को उपप्रधान पद के चुनाव के दौरान राजनीतिक टकराव देखने को मिला। पहले दिन बस में तोड़फोड़ और समर्थकों का प्रदर्शन हुआ तो दूसरे दिन एसपी और विधायक के बीच तीखी बहस चर्चा का विषय बनी। हालांकि उपप्रधान चुनाव में कांग्रेस ने 9-6 के मतों से जीत दर्ज की।

मांडलगढ़ पंचायत समिति में कांग्रेस का दबदबा बरकरार : सूरजमल गुर्जर बने उप प्रधान, 13-8 से दर्ज की जीत

प्रधान पद पर गणेश लाल जाट के बाद उप प्रधान की कुर्सी पर भी कांग्रेस का कब्जा; ढोल-नगाड़ों के साथ कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न, माला पहनाकर दी बधाई

स्मार्ट हलचल



मांडलगढ़/भीलवाड़ा । मांडलगढ़ पंचायत समिति के उप प्रधान पद के चुनाव में कांग्रेस के सूरजमल गुर्जर ने जीत दर्ज की है। शनिवार (28 नवंबर) को संपन्न हुए निर्वाचन में सूरजमल गुर्जर मांडलगढ़ पंचायत समिति के नए उप प्रधान निर्वाचित हुए।

13-8 के आंकड़े के साथ जीत, कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

21 सदस्यों वाली मांडलगढ़ पंचायत समिति में कांग्रेस के 13 और भाजपा के 8 सदस्य हैं। मतदान में कांग्रेस को अपने सभी सदस्यों का समर्थन मिला और सूरजमल गुर्जर ने जीत हासिल की। इससे पहले प्रधान पद पर कांग्रेस के गणेश लाल जाट की जीत के बाद अब उप प्रधान पद पर भी कांग्रेस का कब्जा होने से पंचायत समिति में पार्टी की स्थिति मजबूत हुई है।

परिणाम घोषित होते ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के साथ जीत का जश्न मनाया और नवनिर्वाचित उप प्रधान सूरजमल गुर्जर को माला पहनाकर बधाई दी।

मांडलगढ़ उप प्रधान चुनाव परिणाम : मुख्य बिंदु

विजयी उप प्रधान: सूरजमल गुर्जर (कांग्रेस)।

मतदान का गणित (कुल 21 सदस्य): कांग्रेस - 13 7 भाजपा - 08।

उत्सव व माहौल: प्रधान पद पर गणेश लाल जाट की जीत के बाद उप प्रधान पद पर भी कब्जा; कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के साथ मनाया जश्न और माला पहनाकर दी बधाई।

झोलाछाप चिकित्सकों और अवैध क्लीनिकों पर स्वास्थ्य विभाग का 15 दिवसीय विशेष निरीक्षण अभियान हुआ तेज

जिलेभर में निरीक्षण दलों की कार्रवाई से अवैध क्लीनिक संचालकों में मचा हड़कंप, क्लीनिक मिले बंद

स्मार्ट हलचल



भीलवाड़ा, 28 नवंबर। जिला कलेक्टर श्री जसमीत सिंह संधू के निर्देशानुसार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले में झोलाछाप चिकित्सकों एवं बिना वैध पंजीकरण संचालित अवैध क्लीनिकों के विरुद्ध 15 दिवसीय विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिलेभर में निरीक्षण एवं कार्रवाई का सिलसिला लगातार जारी है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. चेतेंद्र पुरी गोस्वामी के निर्देशन में शनिवार को जिले के विभिन्न ब्लॉकों में गठित निरीक्षण दलों द्वारा सघन निरीक्षण किया गया। विभाग की इस कार्रवाई से झोलाछाप चिकित्सकों एवं अवैध रूप से क्लीनिक संचालित करने वाले व्यक्तियों में हड़कंप मच गया। निरीक्षण के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित किए जा रहे कुछ क्लीनिक बंद मिले। निरीक्षण दलों द्वारा मौके पर नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की गई। सीएमएचओ डॉ. गोस्वामी ने आमजन से अपील की है कि अपने क्षेत्र में यदि कोई व्यक्ति बिना वैध चिकित्सकीय योग्यता अथवा पंजीकरण के क्लीनिक संचालित कर उपचार कर रहा है, तो इसकी सूचना चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग को अवश्य दें। इसके लिए जिला स्तर पर स्थापित कंट्रोल रूम के दूरभाष नंबर 01482-232643 पर शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है। उन्होंने आमजन से अपील की कि अनाधिकृत व्यक्तियों से उपचार करवाने से बचें तथा ऐसे मामलों की सूचना विभाग को देकर सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहयोग करें।

निर्वाण पीठाधीश्वर स्वामी विशोकानंद भारती का महाप्रयाण

स्मार्ट हलचल



बीकानेर। सनातन धर्म के आकाश से एक और दिव्य नक्षत्र अस्त हो गया। श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी के आचार्य महामंडलेश्वर, निर्वाण पीठाधीश्वर, बीकानेर राजगुरु स्वामी विशोकानंद भारती जी महाराज का 74 वर्ष की आयु में दिल्ली में ब्रह्मलीन होना, केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं, एक जीवंत वैदिक परम्परा का मौन हो जाना है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व काशी में संस्कृति संसद के मंच से स्वामी जी का अत्यंत महत्वपूर्ण उद्बोधन प्राप्त करने का अवसर मिला था।

रविवार, 29 नवंबर को बीकानेर में समाधि दी जाएगी

स्वामी जी का जीवन तप, त्याग और विद्या का त्रिवेणी संगम था। उत्तरकाशी की पवित्र भूमि में जन्म लेकर आपने बाल्यकाल से ही गुरुकुल की कठोर साधना को अपनाया। आप केवल अखाड़े के आचार्य नहीं थे, आप गुरुकुल परम्परा के पुनरुद्धारक थे। देशभर में आपके द्वारा स्थापित 7 गुरुकुल आज भी वैदिक शिक्षा की ज्योति जला रहे हैं। हरिद्वार कनखल के श्रीयंत्र मंदिर सोमेश्वर धाम से लेकर बीकानेर के राजदरबार तक, आप धर्म के एक सजग प्रहरी की भांति स्थित थे। कुंभ, अर्धकुंभ और संत समागमों में आपकी उपस्थिति मात्र से ही मर्यादा और शास्त्रीयता का बोध होता था। आप अखाड़ा परम्परा को विवाद से नहीं, संवाद और शास्त्रार्थ से चलाने में विश्वास रखते थे। आपका यूं अचानक चले जाना संत समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। अखिलभारतीय संतासमिति और गंगामहासभा के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी जीतेन्द्रानंद जी सरस्वती, संस्कृति संसद के संयोजक और श्री काशी विद्वत्परिषद के संगठन मंत्री आचार्य गोविंद शर्मा सहित संस्कृति संसद के आयोजक मंडल ने ब्रह्मलीन स्वामी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

उनियारा उपखंड में सड़कों की बदहाली से जनता बेहाल-जिम्मेदारों की अनदेखी पर उठे सवाल,

अलीगढ़ क्षेत्र के तीन प्रमुख सड़क मार्गों पर दो-दो फीट तक गहरे गड्ढे, हादसों का बना खतरा; अधिकारी और जनप्रतिनिधि आखिर कब लेंगे सुध...?

ग्रामीणों ने दी चेतावनी— समय रहते सड़क निर्माण व मरम्मत नहीं हुई तो सड़कों पर उतरकर करेंगे आंदोलन

स्मार्ट हलचल



टोंक/अलीगढ़। उनियारा उपखंड क्षेत्र में सड़कों की बदहाल स्थिति अब आमजन के लिए गंभीर परेशानी और दुर्घटनाओं का कारण बनती जा रही है। अलीगढ़ क्षेत्र के तीन प्रमुख सड़क मार्गों पर जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे होने से आवागमन जोखिम भरा हो गया है। हालात ऐसे हैं कि कई स्थानों पर सड़क पर दो-दो फीट तक गहरे गड्ढे दिखाई दे रहे हैं। इसके बावजूद संबंधित पीडब्यूडी विभाग के अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की ओर से समस्या के स्थायी समाधान को लेकर प्रभावी कार्रवाई नजर नहीं आ रही है। क्षेत्र के अलीगढ़ से खोहल्या-चितानी-केरोद-सुरेली रोड, अलीगढ़ से आसलगांव-चौथ का बरवाड़ा रोड तथा नेशनल हाईवे आमली मोड़ से सोप-आमली रोड की हालत बेहद खराब बताई जा रही है। इन मार्गों पर जगह-जगह सड़क उखड़ चुकी है और गहरे गड्ढों के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। विशेषकर दोपहिया वाहन चालकों, स्कूली विद्यार्थियों, बुजुर्गों, मरीजों और किसानों के लिए इन रास्तों से गुजरना किसी चुनौती से कम नहीं है।

अधिकारियों की आवाजाही के बावजूद समस्या जस की तस

सबसे बड़ा सवाल यह है कि जिन सड़क मार्गों से शासन-प्रशासन के अधिकारी सरकारी योजनाओं के निरीक्षण, जनसुनवाई और अन्य प्रशासनिक कार्यों के लिए नियमित रूप से गुजरते हैं, उन्हीं सड़कों की बदहाली जिम्मेदार अधिकारियों की नजरों से कैसे ओझल है? क्या संबंधित विभाग के अधिकारियों ने इन मार्गों का वास्तविक स्थिति के अनुसार निरीक्षण किया है? यदि किया है तो अब तक मरम्मत अथवा नवीन निर्माण की कार्रवाई क्यों नहीं हुई? वहीं क्षेत्र के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर भी सवाल उठने लगे हैं। जनता ने जिन प्रतिनिधियों को क्षेत्र के विकास और बुनियादी सुविधाओं के लिए चुना है, उनसे यह अपेक्षा है कि वे विधानसभा, पंचायत समिति और अन्य संबंधित मंचों पर सड़क समस्या को प्रमुखता से उठाकर बजट एवं निर्माण कार्य की स्वीकृति सुनिश्चित करवाएं। केवल आश्वासन और निरीक्षण से सड़कें दुरुस्त नहीं होंगी, इसके लिए समयबद्ध कार्यवाही जरूरी है।

ग्रामीणों में आक्रोश, आंदोलन की चेतावनी

ग्रामीणों में पूर्व पंचायत समिति सदस्य फोरूलाल मीणा, कांग्रेस नेता रामप्रसाद मीणा, शंकरलाल, अमीरमल चौधरी, डूंगर सिंह मीणा, सांवलराम मीणा, मुरारीलाल, भरतलाल मीणा, प्रदीप मीणा और राकेश मीणा सहित कई गणमान्य लोगों ने बताया कि लंबे समय से इन सड़कों की स्थिति खराब बनी हुई है। बार-बार परेशानी झेलने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं होने से ग्रामीणों में शासन-प्रशासन के प्रति गहरा आक्रोश है। ग्रामीणों ने मांग की है कि संबंधित पीडब्यूडी विभाग तत्काल तीनों सड़क मार्गों का तकनीकी सर्वे करवाकर क्षतिग्रस्त हिस्सों की पहचान करे तथा जहां मरम्मत संभव है वहां तत्काल मरम्मत और जहां सड़क पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है वहां नवीन निर्माण करवाया जाए।साथ ही निर्माण कार्य की गुणवत्ता, स्वीकृत बजट और कार्य पूर्ण करने की समयसीमा भी सार्वजनिक की जाए। ग्रामीणों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि शासन-प्रशासन ने शीघ्र ही इन सड़कों के निर्माण एवं मरम्मत को लेकर ठोस कदम नहीं उठाए तो क्षेत्रवासियों को मजबूरन सड़कों पर उतरकर आंदोलन करना पड़ेगा।

अब सवाल जवाबदेही का है–

आखिर इन सड़कों की बदहाली के लिए जिम्मेदार विभाग कौन है? मरम्मत का प्रस्ताव लंबित है या बजट की कमी है? यदि बजट स्वीकृत है तो काम शुरू क्यों नहीं हुआ? और यदि प्रस्ताव ही नहीं बना तो अब तक जनप्रतिनिधियों ने इस दिशा में पहल क्यों नहीं की? क्षेत्र की जनता को आश्वासन नहीं, सुरक्षित और सुगम सड़कें चाहिए।

इनका है कहना

वहीं इस संबंध में जानकारी लेने पर सार्वजनिक निर्माण विभाग अलीगढ़ खंड के अधिशासी अभियंता राहुल गुप्ता का कहना है कि पूर्व में भी उक्त तीनों सड़कों का प्रस्ताव भिजवाया जा चुका है, अब हाल ही में दो दिन पहले भी एक आदेश आया है, जिसमें दोबारा से क्षेत्र की जर्जर सड़कों के प्रस्ताव मांगे गए हैं, जो जल्द ही भिजवा दिए जाएंगे।

भीलवाड़ा जिला प्रमुख कैलाश मीणा की निकलेगी भव्य स्वागत रैली, रास्ते में जगह-जगह होगा अभिनंदन

भीलवाड़ा से शुरू होकर बिगोद, मांडलगढ़, बिजौलिया होते हुए तिलस्वां कांश्या पहुंचेगी रैली, स्वागत की तैयारियों में जुटे समर्थक

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। नवनियुक्त जिला प्रमुख कैलाश मीणा के सम्मान में रविवार को भव्य स्वागत रैली निकाली जाएगी। रैली को लेकर समर्थकों और क्षेत्रवासियों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। जिला प्रमुख के स्वागत के लिए भीलवाड़ा से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक विभिन्न स्थानों पर तैयारियां की जा रही हैं। स्वागत रैली भीलवाड़ा से रवाना होगी। इसके बाद विभिन्न कस्बों और गांवों से गुजरते हुए तिलस्वां कांश्या पहुंचेगी। निर्धारित मार्ग में जगह-जगह स्थानीय जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों, युवाओं और ग्रामीणों की ओर से कैलाश मीणा का माल्यार्पण कर स्वागत एवं अभिनंदन किया जाएगा।

इन स्थानों से गुजरेगी स्वागत रैली

रैली का मार्ग भीलवाड़ा से शुरू होकर सुवाईपुर, बनका खेड़ा, बिगोद, मांडलगढ़, लाडपुरा, आरोली, सलावटिया और बिजौलिया होते हुए तिलस्वां कांश्या तक रहेगा। रैली के दौरान विभिन्न स्थानों पर स्वागत कार्यक्रम आयोजित होंगे। समर्थकों की ओर से स्वागत द्वार सजाने, माल्यार्पण और पुष्पवर्षा की तैयारियां की जा रही हैं। नवनियुक्त जिला प्रमुख कैलाश मीणा के सम्मान में आयोजित इस स्वागत रैली को लेकर क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में भी अपने जनप्रतिनिधि के स्वागत को लेकर उत्सुकता बनी हुई है। रविवार को भीलवाड़ा से तिलस्वां कांश्या तक स्वागत और अभिनंदन का सिलसिला चलेगा।

ब्लैक डे पर अधिवक्ताओं ने न्यायालयों में रखा कार्य स्थगित, मुख्यमंत्री के नाम पर सौंपा 18 वां स्मरण पत्र

शाहपुरा जिला बहाली की मांग को लेकर आंदोलन जारी, पंचायतीराज चुनावों के परिणामों के बाद संघर्ष समिति ने सरकार को याद दिलाया अपना वादा...

स्मार्ट हलचल



शाहपुरा को पुनः जिले का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर चल रहा जिला बहाली आंदोलन लगातार जारी है। जिला समाप्त किए जाने के विरोध में प्रत्येक माह की 28 तारीख को मनाए जाने वाले ब्लैक डे के अवसर पर शनिवार को अधिवक्ताओं ने न्यायालयों में कार्य स्थगित रखकर विरोध जताया। वहीं, शाहपुरा जिला बहाल करो संघर्ष समिति की ओर से मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के नाम 18वां स्मरण पत्र तहसीलदार को सौंपकर सरकार को अपना वादा याद दिलाया गया।

जिला बहाल करो संघर्ष समिति के महासचिव एडवोकेट कमलेश मुण्डेतिया ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा 28 दिसंबर 2024 को शाहपुरा का जिला दर्जा समाप्त किए जाने के बाद से ही क्षेत्र की जनता में भारी आक्रोश व्याप्त है। इसी के विरोध में हर महीने की 28 तारीख को ब्लैक डे मनाकर जिला बहाली की मांग को बुलंद किया जा रहा है। इस अवसर पर अभिभाषक संस्था शाहपुरा के अध्यक्ष आशीष पालीवाल ने शाहपुरा के विभिन्न न्यायालयों में लिखित कार्य स्थगन पत्र प्रस्तुत कर न्यायिक कार्यों का बहिष्कार किया। अधिवक्ताओं ने एकजुटता दिखाते हुए कार्य स्थगन का समर्थन किया।

संघर्ष समिति के संयोजक एडवोकेट रामप्रसाद जाट ने कहा कि

समिति शाहपुरा की जनता से किए गए वादे को पूरा करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में संघर्ष समिति अध्यक्ष एडवोकेट दुर्गालाल राजोरा के नेतृत्व में समिति पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने शांतिपूर्ण नारेबाजी और प्रदर्शन करते हुए तहसीलदार शाहपुरा को मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के नाम 18वां स्मरण पत्र सौंपा। इस दौरान संघर्ष समिति अध्यक्ष एडवोकेट दुर्गालाल राजोरा ने कहा कि सरकार अब शाहपुरा की जनता के धैर्य की परीक्षा लेना बंद करे और शाहपुरा को पुनः जिले का दर्जा देकर अपना वादा पूरा करे। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने शीघ्र सकारात्मक निर्णय नहीं लिया तो आने वाले समय में जनता की नाराजगी का जवाब सरकार को देना पड़ेगा।

ये रहे उपस्थित

इस दौरान संघर्ष समिति अध्यक्ष दुर्गालाल राजोरा, संयोजक रामप्रसाद जाट, महासचिव कमलेश मुण्डेतिया, संरक्षक राजेंद्र पांडे, हाजी उस्मान मोहम्मद छिपा, सत्यनारायण पाठक, अजय मेहता, कोषाध्यक्ष उदयलाल बेरवा, सहकोषाध्यक्ष प्रवीण पारीक, सहसचिव नूर मोहम्मद उर्फ छोटू रंगरेज, उपाध्यक्ष सुरेश घूसर, समिति सदस्य पुखराज जोशी, थानमल जीनगर, मदनलाल कण्डारा, रामधन बोहरा, प्रियकांत शर्मा, प्रॉपर्टी यूनियन अध्यक्ष सुरेश गुर्जर, अभिभाषक संस्था अध्यक्ष आशीष पालीवाल, वरिष्ठ अधिवक्ता त्रिलोकचंद नोलखा, गजेन्द्र प्रताप सिंह राणावत, अधिवक्ता चावण्ड सिंह, अरविंद सिंह, वीरेंद्र पत्रिया, निखिल व्यास, आशीष भारद्वाज, सोहेल खान, प्रलेख लेखक रमेश मालू, अरुण राव, पंकज एवं शिवराज कोहली सहित कई अधिवक्ता और आमजन उपस्थित रहे।

नवोदय विद्यालय परीक्षा में 308 पंजीकृत विद्यार्थियों में से 264 ने दी परीक्षा,परीक्षा शांति पूर्ण ढंग से सम्पन्न

स्मार्ट हलचल



चौमहला जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा सत्र 2026-27 के तहत शनिवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगाधार परीक्षा केंद्र पर परीक्षा आयोजित हुई। परीक्षा में क्षेत्र के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। केंद्र पर कुल 308 विद्यार्थी पंजीकृत थे, जिनमें से 264 विद्यार्थी परीक्षा में उपस्थित रहे। इस तरह कुल पंजीकृत विद्यार्थियों में से करीब 86 प्रतिशत विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। केंद्र अधीक्षक मनोहर दास बैरागी ने बताया कि ब्लॉक स्तर पर आयोजित नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति रही। परीक्षा के दौरान केंद्र पर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गईं तथा परीक्षा शांतिपूर्ण एवं सुचारू रूप से संपन्न हुई। परीक्षा केंद्र का मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजेंद्र जैन, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बाबूलाल चौहान, विद्यालय प्रधानाचार्य प्रभु लाल मेहर एवं व्याख्याता ओम प्रकाश शर्मा ने अवलोकन किया। अधिकारियों ने परीक्षा आयोजन एवं केंद्र की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। परीक्षा में विद्यार्थियों की उल्लेखनीय सहभागिता से क्षेत्र में नवोदय विद्यालय प्रवेश को लेकर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की रुचि नजर आई

माउंट आबू में पहली बार सजा पक्षियों का संसार, बर्ड फेस्टिवल में 25 से अधिक प्रजातियों के हुए दर्शन

देशभर के पक्षी विशेषज्ञ, वैज्ञानिक और प्रकृतिप्रेमी जुटे, 400 विद्यार्थियों ने लिया भाग; तितलियों की लाइव लाइफ साइकल और 2000 से अधिक पक्षी आधारित डाक टिकटों की प्रदर्शनी बनी आकर्षण...

स्वर्गीय अनिल माथुर की स्मृति में प्रकृति संरक्षण पुरस्कार से सरूपा राम माली सम्मानित, विशेषज्ञों ने साझा किए पक्षी संरक्षण के शोध और अनुभव



स्मार्ट हलचल

उदयपुर - माउंट आबू, 28 नवंबर। अरावली की हरी-भरी वादियों में शनिवार को पक्षियों की चहचहाहट, प्रकृति की अनूठी विविधता और संरक्षण के संकल्प के साथ पहले 'माउंट आबू बर्ड फेस्टिवल-2026' का भव्य शुभारंभ हुआ। राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउंट आबू में पहली बार आयोजित इस दो दिवसीय महोत्सव में देशभर से पक्षी विज्ञानी, बर्ड एक्सपर्ट, वैज्ञानिक, वन्यजीव संरक्षणकर्ता और प्रकृतिप्रेमी जुटे। सुबह आयोजित बर्ड वाचिंग में 25 से अधिक प्रजातियों के पक्षियों के दर्शन हुए, वहीं तितलियों की लाइव लाइफ साइकल और दो हजार से अधिक पक्षी आधारित डाक टिकटों की प्रदर्शनी ने विद्यार्थियों और प्रकृतिप्रेमियों का विशेष ध्यान आकर्षित किया। करीब 400 विद्यार्थियों की सहभागिता वाले इस आयोजन ने माउंट आबू की समृद्ध जैव विविधता को जानने और उसके संरक्षण का महत्वपूर्ण मंच उपलब्ध कराया। ग्रीन पीपल सोसायटी (जीपीएस), उदयपुर के तत्वावधान में राजस्थान वन विभाग, विश्व प्रकृति निधि (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया) और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की आंतरिक सुरक्षा अकादमी के सहयोग से आयोजित बर्ड फेस्टिवल का उद्घाटन शनिवार को आंतरिक सुरक्षा अकादमी परिसर में हुआ। यह आयोजन माउंट आबू के प्रसिद्ध प्रकृतिविद् एवं पक्षी प्रेमी स्वर्गीय अनिल माथुर की स्मृति तथा उनके प्रकृति संरक्षण के प्रयासों को समर्पित है। उद्घाटन समारोह में संभागीय मुख्य वन संरक्षक सुनील छिद्री, उप वन संरक्षक सिरोही डॉ. अजीत उचोई, माउंट आबू नगरपालिका अध्यक्ष सुनील आचार्य, उपखंड अधिकारी सिरोही राकेश श्रीवास्तव, लेफ्टिनेंट कर्नल सुमित भारद्वाज, आंतरिक सुरक्षा अकादमी के कमांडेंट महेंद्र कुमार, ग्रीन पीपल सोसायटी अध्यक्ष राहुल भटनागर, उपाध्यक्ष विक्रम सिंह एवं डॉ. शरद श्रीवास्तव, उप वन संरक्षक वन्यजीव मंडल उदयपुर अनुराग भटनागर, डॉ सुजीत नरवडे, श्याम दवे, रमा सिंह, डॉ बाशोबी भटनागर, गजेंद्र सिंह, विक्रम सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी महेंद्र कुमार नानीवाल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

प्रकृति संरक्षण के लिए सरूपा राम माली को मिला अनिल माथुर स्मृति सम्मान

बर्ड फेस्टिवल का विशेष आकर्षण स्वर्गीय अनिल माथुर की स्मृति में स्थापित प्रकृति संरक्षण पुरस्कार रहा। यह सम्मान राजस्थान के डोड़वा उच्च माध्यमिक विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक सरूपा राम माली को उनके उल्लेखनीय प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण प्रयासों के लिए प्रदान किया गया। उन्हें प्रशस्ति-पत्र एवं 5,001 रुपये की नकद राशि स्वर्गीय अनिल माथुर की पुत्री पूर्णिमा और दामाद रवि माथुर ने भेंट की। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा रंगीन चित्रों से सुसज्जित पक्षी पहचान पुस्तिका और बर्ड फेस्टिवल की स्मारिका का विमोचन किया गया। विद्यार्थियों को पक्षी पहचान पुस्तिका वितरित की गई। साथ ही माउंट आबू निवासी डॉ. अरुण शर्मा की पुस्तक 'रक्त सूत्र' का भी विमोचन हुआ।

सुबह की बर्ड वाचिंग में दिखीं 25 से अधिक प्रजातियां

बर्ड फेस्टिवल की शुरुआत सुबह प्रकृति के बीच पक्षी अवलोकन से हुई। वन विभाग के सहयोग से आबू पर्वत अभयारण्य के तीन अलग-अलग प्रकृति पथों पर बर्ड वाचिंग आयोजित की गई। बर्ड एक्सपर्ट डॉ. सतीश शर्मा, विक्रम सिंह, राहुल भटनागर, वीरेंद्र सिंह बेड़सा, डॉ. कमलेश शर्मा, विनय दवे, दर्शन मेनारिया और कनिष्क कोठारी सहित विशेषज्ञों ने पक्षी प्रेमियों को विभिन्न प्रजातियों की पहचान कराई। इस दौरान ग्रीन मुनिया, सिल्वर बिल मुनिया, शॉवलर, टफ्टेड पोचार्ड, पिनटेल, पर्पल स्वाम्फेन, कॉमन पोचार्ड, ग्रे हेरॉन, सैंडपाइपर, वैगटेल, इग्रेट, कॉर्मोरेंट, ग्रेब, कूट, रेड वेंटेड बुलबुल, ट्री पाई और मैना सहित 25 से अधिक प्रजातियों के पक्षी दिखाई दिए। विशेषज्ञों ने इनके प्राकृतिक आवास, भोजन, प्रवास और प्रजनन से जुड़ी रोचक जानकारियां भी साझा कीं।

तितलियों की लाइव लाइफ साइकल ने बच्चों को किया रोमांचित

बर्ड फेस्टिवल में पक्षियों के साथ तितलियों की दुनिया भी आकर्षण का केंद्र रही। डूंगरपुर के बटरफ्लाई एक्सपर्ट मुकेश पंवार ने राजस्थान की प्रमुख तितली प्रजातियों के बारे में जानकारी देते हुए पांच तितलियों की लाइव लाइफ साइकल प्रदर्शित की। अंडे से इल्ली, प्यूपा और फिर खूबसूरत तितली बनने की प्राकृतिक प्रक्रिया को करीब से देखकर विद्यार्थी खासे उत्साहित नजर आए। इसी प्रकार उदयपुर की फिलैटली विशेषज्ञ पुष्पा खमेसरा ने भारत सहित विभिन्न देशों के दो हजार से अधिक पक्षी आधारित डाक टिकटों की अनूठी प्रदर्शनी लगाई। डाक टिकटों के माध्यम से पक्षियों की विविधता और उनके संरक्षण का संदेश दिया गया।

प्रदर्शनी में दिखी जैव विविधता की झलक

आंतरिक सुरक्षा अकादमी परिसर में प्रकृति एवं पक्षी संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनी लगाई गई। फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, मैक्स आर्ट, राजस्थान वन विकास निगम और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के उत्पादों एवं साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गई। विश्व प्रकृति निधि के सहयोग से विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

चार विशेषज्ञों ने साझा किए पक्षी एवं वन्यजीव संरक्षण के अनुभव

दोपहर बाद आयोजित तकनीकी सत्र में देश के चार विशेषज्ञों ने पक्षियों और वन्यजीव संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर शोधपरक व्याख्यान दिए।

डॉ. रजत भार्गव, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के पूर्व वैज्ञानिक ने राजस्थान में संकटग्रस्त ग्रीन मुनिया के संरक्षण पर विचार रखे।

डॉ. सुतिर्था दत्ता, भारतीय वन्यजीव संस्थान के वैज्ञानिक ने ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की पारिस्थितिकी और संरक्षण से जुड़े विषयों पर जानकारी दी।

अभिषेक रे, संगीतकार एवं वन्यजीव संरक्षणकर्ता ने 'बाघ : द इनसाइड स्टोरी' विषय पर अपनी बात रखी।

विजयादित्य सिंह राठौड़, वन्यजीव जीवविज्ञानी एवं लेखक ने थार मरुस्थल में कृषि परिवर्तन और अकशेरुकी जीवों एवं पक्षियों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया।

विशेषज्ञों ने माउंट आबू सहित राजस्थान की विशिष्ट पक्षी संपदा, पारिस्थितिकी संतुलन में पक्षियों की भूमिका, प्राकृतिक आवासों के संरक्षण और बदलते पर्यावरण की चुनौतियों पर महत्वपूर्ण जानकारियां साझा कीं।

सामूहिक प्रयासों से ही संरक्षित होगी आबू की प्राकृतिक विरासत

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए संभागीय मुख्य वन संरक्षक सुनील छिद्री ने माउंट आबू की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। नगरपालिका अध्यक्ष सुनील आचार्य ने ऐसे आयोजनों को क्षेत्र में ईको-टूरिज्म को बढ़ावा देने की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। आंतरिक सुरक्षा अकादमी के कमांडेंट महेंद्र कुमार ने राष्ट्रीय महत्व के ऐसे आयोजनों में संस्थान की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। अनुराग भटनागर ने पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में पक्षियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। ग्रीन पीपल सोसायटी के अध्यक्ष राहुल भटनागर ने स्वागत उद्बोधन में बर्ड फेस्टिवल के उद्देश्यों और इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ.सतीश कुमार शर्मा ने किया जबकि आभार डॉ. ललित जोशी ने व्यक्त किया।

कल भी होंगे विशेष बर्ड वॉक, तीन प्रकृति पथों पर होगा पक्षी अवलोकन

ग्रीन पीपल सोसाइटी के अध्यक्ष राहुल भटनागर ने बताया कि बर्ड फेस्टिवल के दूसरे दिन रविवार, 29 नवंबर को आबू पर्वत अभयारण्य के तीन विशेष प्रकृति पथों– ओरिया तालाब, टाइगर पाथ और ट्रेवर्स ट्रैक पर सूर्योदय से सुबह 9 बजे तक बर्ड वाचिंग आयोजित होगी। इसके बाद प्रश्नोत्तरी एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। साथ ही पक्षी प्रेमी अपने अनुभव साझा करेंगे। आयोजन समिति के प्रो. इंद्रजीत माथुर ने बताया कि ग्रीन पीपल सोसायटी की मंशा इस आयोजन को केवल दो दिवसीय उत्सव तक सीमित रखने की नहीं, बल्कि इसे वार्षिक संरक्षण अभियान के रूप में विकसित करने की है। इसके तहत पक्षी गणना, ई-बर्ड के माध्यम से नागरिक विज्ञान को प्रोत्साहन, विद्यालयों में बर्ड क्लब और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण जैसी गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाएगा। बर्ड फेस्टिवल में पहुंचे प्रबुद्धजनों ने कहा कि माउंट आबू में पहली बार आयोजित यह बर्ड फेस्टिवल केवल पक्षियों को देखने का आयोजन नहीं, बल्कि प्रकृति को समझने, जैव विविधता के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने और संरक्षण की जिम्मेदारी नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक सार्थक प्रयास बनकर सामने आया है।

अदालत में झूठा शपथ पत्र देना पड़ा भारी

स्थायी लोक अदालत ने टेक्नॉय मोटर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वर्कशॉप निदेशक के विरुद्ध आपराधिक मुकदमा दर्ज करने के दिए आदेश

स्मार्ट हलचल

उदयपुर। न्यायिक कार्यवाही के दौरान जानबूझकर झूठा शपथ पत्र (मिथ्या साक्ष्य) पेश करने के गंभीर मामले में उदयपुर की स्थायी लोक अदालत ने सख्त रुख अपनाते हुए कड़ा निर्णय सुनाया है। स्थायी लोक अदालत के अध्यक्ष न्यायाधीश महेंद्र कुमार सिसोदिया तथा सदस्यगण अधिवक्ता कमलेश दानी एवं सुरभि मेनारिया (धींग) की खंडपीठ ने इस प्रकरण की सुनवाई करते हुए टेक्नॉय मोटर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,के निदेशक संपत लाल जैन के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 216 और 229 के तहत मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, उदयपुर के समक्ष आपराधिक परिवाद पेश करने के आदेश दिए हैं।

क्या है पूरा मामला

प्रार्थीया आजाद देवी ने अपनी गाड़ी की 'एक्सटेंडेड वारंटी' के लिए अतिरिक्त भुगतान किया था। सुनवाई के दौरान अप्रार्थी संख्या-1 के निदेशक संपत लाल जैन ने साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत अपने शपथ पत्र में इस तथ्य को सरासर गलत बताते हुए कहा था कि वारंटी बीमा कंपनी द्वारा दी गई है, न कि अतिरिक्त राशि लेकर वर्कशॉप द्वारा।

अदालत की सख्त टिप्पणी

जब अदालत द्वारा इस संबंध में कारण बताओ नोटिस जारी किया गया, तो निदेशक ने इसे 'टंकण त्रुटि' (टाइपिंग की मानवीय भूल) बताकर बचने का प्रयास किया। पीठ ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि एक जिम्मेदार पद पर कार्यरत निदेशक द्वारा बिना पढ़े शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करना और टंकण त्रुटि का बहाना बनाना स्वीकार्य नहीं है। इसके अलावा, उन्होंने अपनी गलती पर न तो कोई खेद व्यक्त किया और न ही बिना शर्त क्षमायाचना की। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने जानबूझकर न्यायिक कार्यवाही को गुमराह करने के लिए झूठा साक्ष्य दिया।

अदालत के निर्णय मे न्याय हित में पीठ ने संपत लाल जैन के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 216 एवं 229 के अंतर्गत अभियोजन चलाने हेतु मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, उदयपुर की अदालत में परिवाद दायर करने का निर्देश दिया है। सक्षम न्यायालय में यह परिवाद पेश करने के लिए मुकेश गावरी को अधिकृत किया गया है।

प्रगति कैंप का शिक्षा अधिकारियों ने किया अवलोकन, पढ़ाई छोड़ चुकी बालिकाओं को फिर शिक्षा से जोड़ने की पहल

स्मार्ट हलचल



चौमहला। डग ब्लॉक में एजुकेट गर्ल्स संस्था की ओर से पढ़ाई बीच में छोड़ चुकी बालिकाओं एवं महिलाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से प्रगति कैंप संचालित किए जा रहे हैं। ब्लॉक के 18 गांवों में 14 से 29 वर्ष आयु वर्ग की 373 महिला शिक्षार्थियों के लिए संचालित इन कैंपों के माध्यम से कक्षा 10वीं से पहले पढ़ाई छोड़ चुकी शिक्षार्थियों को नामांकन से लेकर परीक्षा की तैयारी तक निशुल्क सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। संस्था के प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर सज्जन सिंह के निर्देशन में महिला प्रेरकों के माध्यम से कैंप संचालित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में शनिवार को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजेंद्र कुमार जैन, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बाबूलाल चौहान, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगधार के व्याख्याता ओमप्रकाश शर्मा, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य लालचंद सोनी एवं व्याख्याता तेजपाल ने गंगधार में संचालित प्रगति कैंप का अवलोकन किया। अवलोकन के दौरान अधिकारियों ने शिक्षार्थियों से संवाद कर उनके पढ़ाई छोड़ने के कारणों, दोबारा शिक्षा से जुड़ने के अनुभवों तथा स्टेट ओपन स्कूल के माध्यम से पढ़ाई जारी रखने और अपने सपनों को पूरा करने के बारे में जानकारी ली। अधिकारियों ने शिक्षार्थियों की समस्याओं को सुना और शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजेंद्र कुमार जैन ने शिक्षार्थियों की समस्याओं का समाधान करते हुए उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहने और नियमित अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बाबूलाल चौहान ने डग ब्लॉक में शिक्षा से संबंधित सहायता के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। व्याख्याता ओमप्रकाश शर्मा ने बालिकाओं को नियमित अध्ययन करते हुए अपने कार्य और पढ़ाई के बीच संतुलन बनाने की प्रेरणा दी। प्रधानाचार्य लालचंद सोनी ने स्टेट ओपन स्कूल के माध्यम से दोबारा नामांकन कर शिक्षा जारी रखने के अवसर पर प्रसन्नता जताते हुए शिक्षार्थियों को अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित किया। कैंप संचालक एवं प्रेरक मंजू कुंवर ने अधिकारियों के मार्गदर्शन, सहयोग और प्रेरणा के लिए आभार व्यक्त किया।

पंचायत समिति चित्तौड़गढ़ व भदेसर में भाजपा के प्रधान व उपप्रधान बनने पर विधायक आक्या ने निकाली सांवलियाजी तक पदयात्रा

स्मार्ट हलचल/ओम जैन



शंभूपुरा। पंचायतीराज चुनाव में भारी सफलता अर्जित करते हुए चित्तौड़ विधानसभा क्षेत्र की पंचायत समिति चित्तौड़गढ़ व भदेसर में भाजपा के प्रधान व उप प्रधान बनने की मनोकामना पूर्ण होने पर विधायक चंद्रभान सिंह आक्या ने शनिवार को सांवलियाजी तक पेदल यात्रा निकाली। शहर के किर्ति प्लाजा स्थित भाजपा चुनाव कार्यालय से आरंभ पेदल यात्रा में विधायक आक्या के साथ नवनिर्वाचित प्रधान भंवरसिंह खरड़ी बावड़ी, मांगी बाई भील, नगर परिषद सभापति अनिल ईनाणी, उप प्रधान शंकरी बाई, रचना लड्ढा, उप सभापति सुदर्शन रामपुरिया, भाजपा जिला उपाध्यक्ष सी पी नामधराणी, नगर मण्डल अध्यक्ष गौरव त्यागी, चुनाव कार्यालय प्रभारी ओमप्रकाश शर्मा, शेलेन्द्र झंवर, तेजपाल रेगर सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता संपूर्ण रास्ते बैण्ड बाजो व भजनो की धून पर नाचते गाते चल रहे थे। जगह जगह पर ग्रामीणो द्वारा विधायक आक्या, भाजपा पदाधिकारियो व कार्यकर्ताओ का पुष्प वर्षा, माल्यार्पण कर व उपरना ओढ़ाकर स्वागत किया। अनेक कार्यकर्ता रास्ते मे भी पदयात्रा से जुड़ते चले गये तथा कुछ दूरी बाद ही यह संख्या सेकडो तक पहुंच गई।

विकसित राजस्थान-2047 की ओर कदम: डाइट उदयपुर में एआई और एडैप्टिव लर्निंग पर वेबिनार

स्मार्ट हलचल

उदयपुर, विकसित राजस्थान-2047 के लक्ष्य को साकार करने तथा प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के उद्देश्य से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), उदयपुर के शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग द्वारा 'विकसित राजस्थान 2047 के संदर्भ में ए आई एवं पर्सनलाइज्ड एडैप्टिव लर्निंग' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डाइट प्राचार्य एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती शीला काहाल्या ने उद्बोधन देते हुए कहा कि विकसित राजस्थान-2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं आधुनिक तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुरूप स्वयं को नवीन तकनीकों से अपडेट रखें तथा ए आई जैसे आधुनिक तकनीकी संसाधनों का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं विद्यार्थी केंद्रित बनाने में करें। वेबिनार के मुख्य वक्ता श्री हिमांशु बारांडा रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बढ़ती उपयोगिता, व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण तथा एडैप्टिव लर्निंग की अवधारणा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ए आई



आधारित तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों की सीखने की गति, क्षमता एवं रुचि के अनुसार शिक्षण सामग्री और अधिगम अनुभव उपलब्ध करवाए जा सकते हैं। इससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक एवं विद्यार्थी केंद्रित बनाया जा सकता है। इस अवसर पर शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग की प्रभागाध्यक्ष श्रीमती बीना कुंवर राजपूत ने बताया कि विकसित राजस्थान-2047 की परिकल्पना को साकार करने में शिक्षा एवं तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षकों को नवीन तकनीकों, विशेषकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डिजिटल शिक्षण संसाधनों से परिचित करवाना समय की आवश्यकता है। इस प्रकार के वेबिनार शिक्षकों की तकनीकी दक्षता एवं व्यावसायिक क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वेबिनार का आयोजन शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग के प्रभारी हरिदत्त शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। इसमें उदयपुर एवं सलूम्बर जिले के विभिन्न ब्लॉकों के पीईईओ विद्यालयों से शिक्षकों की ऑनलाइन सहभागिता रही। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को ए आई आधारित नवाचारों एवं व्यक्तिगत अधिगम की आधुनिक अवधारणाओं से परिचित करवाना तथा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए तैयार करना रहा।

चार कांग्रेस समर्थित सदस्यों को मतदान से रोकने के आरोप पर हंगामा, पुलिस ने किया हल्का बल प्रयोग

अंतिम समय में चारों सदस्यों ने किया मतदान, कांग्रेस की आयुषी नागर 15 मत लेकर एक वोट से बनी उप प्रधान

स्मार्ट हलचल

सुनेल पंचायत समिति पिड़ावा मुख्यालय सुनेल में शनिवार को उप प्रधान चुनाव के दौरान मतदान प्रक्रिया को लेकर विवाद खड़ा हो गया। चार कांग्रेस समर्थित जनपद सदस्यों को मतदान से वंचित किए जाने के आरोप के बाद पंचायत समिति परिसर के बाहर हंगामा हो गया। घटनाक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए और माहौल तनावपूर्ण हो गया। कांग्रेस कार्यकर्ता प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए उग्र होने लगे। स्थिति बिगड़ने पर पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर भीड़ को तितर-बितर किया। इस दौरान कुछ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के चोटिल होने की जानकारी सामने आई। पंचायत



समिति पिड़ावा में कुल 29 जनपद सदस्य हैं। उप प्रधान चुनाव के दौरान शुरुआत में भाजपा के पक्ष में 14 सदस्यों के मतदान करने तथा कांग्रेस के 11 सदस्यों के मतदान के बाद चार कांग्रेस समर्थित सदस्यों को मतदान से रोकने का आरोप सामने आया। इस घटनाक्रम के बाद पंचायत समिति परिसर के बाहर विरोध और हंगामा शुरू हो गया। मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बल तैनात किया गया। पुलिस ने हल्का बल प्रयोग करते हुए भीड़ को तितर-बितर किया। इस दौरान आधा दर्जन कांग्रेस कार्यकर्ताओं के चोटिल होने की



जानकारी भी सामने आई। उप प्रधान पद के लिए कांग्रेस की आयुषी नागर और भाजपा के बालकृष्ण चुनाव मैदान में थे। मतदान से वंचित किए जाने की शिकायत के बीच शाम करीब 4:45 बजे संबंधित चारों सदस्यों का निर्धारित समय समाप्त होने से ठीक पहले मतदान करवाया गया। इसके बाद चुनाव प्रक्रिया पूरी हुई।

आयुषी नागर ने एक मत से हासिल की जीत

शाम 5 बजे के बाद रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम दिनेश कुमार मीणा ने चुनाव परिणाम घोषित किया। परिणाम के अनुसार कांग्रेस प्रत्याशी आयुषी नागर को 15 मत तथा भाजपा प्रत्याशी बालकृष्ण को 14 मत प्राप्त हुए। इस तरह आयुषी नागर एक मत के अंतर से जीत हासिल कर पंचायत समिति पिड़ावा की उप प्रधान निर्वाचित हुईं। गौरतलब है कि शुक्रवार को हुए प्रधान पद के चुनाव में भी कांग्रेस ने जीत हासिल की थी। कांग्रेस प्रत्याशी बने सिंह चौहान को 15 मत मिले थे, जबकि भाजपा प्रत्याशी को 13 मत प्राप्त हुए थे। बने सिंह चौहान प्रधान निर्वाचित हुए थे। उस चुनाव में नेहा कंवर का एक मत नहीं डल पाया था। उप प्रधान चुनाव के दौरान मतदान प्रक्रिया को लेकर हुए विवाद, विरोध प्रदर्शन, पुलिस के हल्के बल प्रयोग और आरोप-प्रत्यारोप के बाद पंचायत समिति क्षेत्र में राजनीतिक माहौल गरमा गया है।

निंबाहेड़ा पंचायत समिति में उप प्रधान चुनाव

कांग्रेस की सुधा जैन 18 मतों से विजयी, भाजपा के उमेश धाकड़ को मिले 5 मत

कुल 23 मतों में से सुधा जैन को मिला स्पष्ट बहुमत; परिणाम घोषित होने के बाद कार्यकर्ताओं ने निकाला जुलूस, आतिशबाजी व मिठाई वितरण के साथ जताई खुशी

स्मार्ट हलचल

निंबाहेड़ा । निंबाहेड़ा पंचायत समिति के उप प्रधान पद के लिएशनिवार (28 नवंबर) को निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न हुई। चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी सुधा जैन ने 18 मत प्राप्त कर जीत दर्ज की, जबकि भाजपा प्रत्याशी उमेश धाकड़ को 5 मत मिले। कुल 23 सदस्यों वाले सदन में सुधा जैन ने स्पष्ट मतों के अंतर से जीत हासिल कर उप प्रधान पद की जिम्मेदारी संभाली।



परिणाम घोषित होते ही जुलूस व मिठाई वितरण

मंडी चौराहा स्थित पंचायत समिति परिसर के बाहर परिणाम घोषित होते ही समर्थकों व कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। नवनिर्वाचित उप प्रधान सुधा जैन की जीत के बाद नगर में जुलूस निकाला गया, जिसमें समर्थकों ने आतिशबाजी की और मिठाई बांटकर एक-दूसरे को बधाई दी। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों व जनसमस्याओं के समाधान को लेकर भी समर्थकों ने आशा व्यक्त की।

निंबाहेड़ा उप प्रधान चुनाव परिणाम : मुख्य बिंदु

विजयी उप प्रधान: सुधा जैन (कांग्रेस) – 18 मत।
निकटतम प्रतिद्वंद्वी: उमेश धाकड़ (भाजपा) – 05 मत।
कुल मतदान: 23 सदस्यों के बीच संपन्न हुआ निर्वाचन।
जीत के बाद: नगर में जुलूस निकाला गया, आतिशबाजी व मिठाई वितरण के साथ जताई गई खुशी।

शाहपुरा बस स्टेशन की बदहाली पर उठे सवाल,आखिर कब जागेगा प्रशासन...?

विधायक निवास से महज एक किलोमीटर से भी कम दूरी पर स्थित बस स्टेशन मूलभूत सुविधाओं को तरस रहा, यात्रियों ने व्यवस्थाएं सुधारने की उठाई मांग

स्मार्ट हलचल

शाहपुरा उपखंड का एकमात्र सरकारी बस स्टेशन इन दिनों बदहाल व्यवस्थाओं के चलते अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। बस स्टेशन की स्थिति देखकर विकास के दावों और धरातल की हकीकत के बीच का अंतर साफ नजर आता है। हैरानी की बात यह है कि विधायक निवास से महज एक किलोमीटर से भी कम दूरी पर स्थित इस बस स्टेशन पर यात्रियों को आज भी मूलभूत सुविधाओं के लिए परेशान होना पड़ रहा है। बस स्टेशन पर आने-जाने वाले यात्रियों को बैठने, स्वच्छ पेयजल और साफ-सफाई जैसी बुनियादी सुविधाएं तक पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। यात्रियों और आमजन ने बस स्टेशन की बदहाल स्थिति पर नाराजगी जताते हुए संबंधित विभाग एवं जनप्रतिनिधियों से तत्काल व्यवस्थाएं सुधारने की मांग की है।



बैठने की व्यवस्था का अभाव, पेयजल के लिए भी परेशानी

बस स्टेशन पर यात्रियों के बैठने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। वहीं स्वच्छ पेयजल की समुचित सुविधा भी उपलब्ध नहीं होने से यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ती है। विशेष रूप से बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को बसों का इंतजार करते समय असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

आवारा मवेशियों का जमावड़ा, गंदगी से फैल रही दुर्गंध

बस स्टेशन परिसर में आवारा मवेशियों के मल-मूत्र से गंदगी फैली हुई है। इसके कारण पूरे परिसर में दुर्गंध का माहौल बना रहता है और यात्रियों के लिए वहां बैठना तक मुश्किल हो जाता है। शौचालयों का निर्माण तो करवा दिया गया है, लेकिन नियमित साफ-सफाई और उचित देखरेख के अभाव में उनका लाभ यात्रियों को नहीं मिल पा रहा है।

सड़क होने के बावजूद उड़ती है धूल-मिट्टी

बस स्टेशन परिसर में सड़क होने के बावजूद बसों के आवागमन के साथ ही धूल-मिट्टी उड़ने लगती है। ऐसे हालात देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो यहां सड़क नहीं, बल्कि कोई कच्चा रास्ता हो। इससे यात्रियों के साथ-साथ आसपास मौजूद लोगों को भी परेशानी होती है।

विकास के दावे पोस्ट और प्रचार तक सीमित क्यों?

एक तरफ विकास को लेकर सोशल मीडिया और प्रचार-प्रसार में बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ शाहपुरा के एकमात्र सरकारी बस स्टेशन की बदहाल तस्वीर उन दावों पर सवाल खड़े कर रही है। विधायक निवास से इतनी कम दूरी पर स्थित बस स्टेशन की यह स्थिति जिम्मेदारों की कार्यशैली और व्यवस्थाओं की निगरानी पर भी सवाल उठाती है।

आमजन का कहना है कि

जनप्रतिनिधियों द्वारा किए जाने वाले विकास के दावे केवल पोस्ट और प्रचार तक सीमित नहीं रहने चाहिए, बल्कि उनका असर धरातल पर भी दिखाई देना चाहिए। शाहपुरा की जनता कोई विशेष सुविधा नहीं मांग रही, बल्कि यात्रियों के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाओं की मांग कर रही है।

जनता की मांग–आश्वासन नहीं, धरातल पर समाधान चाहिए

आमजन ने संबंधित विभाग, प्रशासन एवं जनप्रतिनिधियों से मांग की है कि बस स्टेशन परिसर में नियमित साफ-सफाई करवाई जाए, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, यात्रियों के बैठने के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं, शौचालयों की नियमित देखरेख हो तथा सड़क की मरम्मत करवाकर धूल-मिट्टी की समस्या से निजात दिलाई जाए।अब सवाल यह है कि आखिर शाहपुरा के एकमात्र सरकारी बस स्टेशन की बदहाल तस्वीर कब बदलेगी? क्या जिम्मेदार अधिकारी और जनप्रतिनिधि यात्रियों की इन समस्याओं को गंभीरता से लेकर समाधान करवाएंगे या फिर आमजन को इसी तरह अव्यवस्थाओं के बीच सफर करने को मजबूर रहना पड़ेगा?

महात्मा ज्योतिबा फुले माली सेवा संस्थान ने फुले को किया नमन, लिया सामाजिक जागृति का संकल्प



136वीं पुण्यतिथि पर फुले सर्कल पर किया माल्यार्पण, नारी शिक्षा और सामाजिक उत्थान में योगदान को किया याद

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा । समाज में शिक्षा, समानता और जागरूकता की अलख जगाने वाले महात्मा ज्योतिबा फुले के विचारों को आत्मसात कर सामाजिक बदलाव की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लिया गया। महात्मा ज्योतिबा फुले माली सेवा संस्थान की ओर से उनकी 136वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित कर उनके सामाजिक योगदान को याद किया गया। नेहरू रोड स्थित महात्मा ज्योतिबा फुले सर्कल पर आयोजित कार्यक्रम में समाजजनों ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। इस दौरान वक्ताओं ने नारी शिक्षा, सामाजिक समानता और समाज उत्थान के लिए महात्मा फुले द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उनके आदर्शों को वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बताया। संस्था सचिव एडवोकेट राजकुमार माली ने कहा कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर शिक्षित और जागरूक समाज का निर्माण करना समय की आवश्यकता है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में जागृति लाकर ही वास्तविक सामाजिक क्रांति संभव है। शिक्षा और एकता के माध्यम से महात्मा फुले के सपनों को साकार करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर अध्यक्ष बद्रीलाल पारेता, जिलाध्यक्ष नंदलाल माली, पूर्व पार्षद दौलत माली, दिनेश माली, गौरीशंकर माली, रामेश्वर माली, चांदमल माली सहित सैकड़ों समाजजन उपस्थित रहे।

सहाड़ा पंचायत समिति में भाजपा की जीत का सिलसिला बरकरार, भेरूलाल गाडरी बने उपप्रधान

(भेरूलाल गाडरी को मिले 10 वोट, कांग्रेस प्रत्याशी कमला बहेड़िया को 9 मतों से करना पड़ा संतोष)

स्मार्ट हलचल

गंगापुर सहाड़ा पंचायत समिति में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी राजनीतिक मजबूती साबित करते हुए प्रधान पद के बाद उपप्रधान पद पर भी जीत का परचम लहराया। उपप्रधान पद के लिए हुए चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार भेरूलाल गाडरी ने 10 मत प्राप्त कर जीत हासिल की। वहीं कांग्रेस की उम्मीदवार कमला बहेड़िया को 9 वोट मिले। इस प्रकार भेरूलाल गाडरी एक मत के अंतर से उपप्रधान निर्वाचित घोषित किए गए। चुनाव परिणाम सामने आते ही भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई। कार्यकर्ताओं ने



एक-दूसरे को बधाई देकर जीत का जश्न मनाया। सहाड़ा पंचायत समिति में उपप्रधान पद का चुनाव काफी रोचक रहा। दोनों प्रमुख दलों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली, लेकिन अंतिम परिणाम भाजपा के पक्ष में रहा।

प्रधान और उपप्रधान दोनों पदों पर भाजपा का कब्जा

सहाड़ा पंचायत समिति के चुनाव में भाजपा ने प्रधान और उपप्रधान दोनों महत्वपूर्ण पदों पर जीत दर्ज कर अपना दबदबा कायम रखा। पहले प्रधान पद पर भाजपा की रतन कंवर निर्वाचित हुईं और अब उपप्रधान पद पर भेरूलाल गाडरी की जीत ने भाजपा की स्थिति को और मजबूत कर दिया है। दोनों पदों पर भाजपा उम्मीदवारों की जीत से कांग्रेस को निराशा का सामना करना पड़ा।

एक वोट से तय हुआ उपप्रधान का चुनाव

उपप्रधान पद के चुनाव में भाजपा प्रत्याशी भेरूलाल गाडरी को 10 मत मिले, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी कमला बहेड़िया को 9 मत प्राप्त हुए। महज एक वोट के अंतर से आए इस परिणाम ने चुनाव को बेहद महत्वपूर्ण बना दिया। एक मत के अंतर से मिली जीत ने भाजपा खेमे में उत्साह को दोगुना कर दिया।

दूनी नगर पालिका के सभी 20 वार्डों में रखे जाएंगे बड़े लोहे के कचरा पात्र-मुख्य बाजार और चौराहों पर भी लगाने की मांग,

स्मार्ट हलचल

टोंक। दूनी तहसील मुख्यालय कस्बे को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के उद्देश्य से दूनी नगर पालिका प्रशासन द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के तहत सभी 20 वार्डों में निर्धारित स्थानों पर बड़े लोहे के कचरा पात्र (डस्टबिन) रखवाए जाएंगे। वहीं, दूनी नगरपालिका मंडल के नवनिर्वाचित पार्षदों ने इस व्यवस्था को अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनाने के लिए वार्डों के साथ-साथ मुख्य बाजार एवं प्रमुख चौराहों पर भी बड़े लोहे के कचरा पात्र लगाने की मांग की है।

मुख्य बाजार, चौराहों और जरूरत वाले स्थानों पर भी लगाने की मांग

दूनी नगरपालिका मंडल के नवनिर्वाचित पार्षद पूरणवीर सिंह रोझ, श्रीमती लक्ष्मी नरेन्द्र मेहरा, इन्द्रराज सैनी, नरेन्द्र जांगिड़ एडवोकेट, पप्पू कर्मावत, रामकल्याण सोनी, कृष्णा बनवारी बडगूजर, मनभर देवी वर्मा एवं अर्चना बडगूजर ने सुझाव देते हुए कहा कि केवल आवासीय वार्डों तक ही यह व्यवस्था सीमित नहीं रहनी चाहिए,



बल्कि दूनी शहर के मुख्य बाजार एवं प्रमुख चौराहों पर भी बड़े लोहे के कचरा पात्र रखे जाने चाहिए। बाजार और चौराहों पर लोगों की आवाजाही अधिक रहती है, ऐसे में मजबूत एवं बड़े कचरा पात्र लगाने से स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जिन स्थानों पर अधिक कचरा एकत्रित होता है, वहां आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त कचरा पात्र भी रखवाए जाएं, ताकि सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी नहीं फैले।

मोहल्लों में कचरे के ढेर से मिलेगी राहत

इस व्यवस्था से मोहल्लों में जगह-जगह लगने वाले कचरे के ढेरों से आमजन को राहत मिलने की उम्मीद है। स्थानीय निवासी घरों का कचरा खुले में फेंकने के बजाय निर्धारित कचरा पात्रों में डाल सकेंगे। इसके बाद नगर पालिका के कचरा संग्रहण वाहन प्रतिदिन कचरा उठाकर ले जाएंगे। नियमित सफाई से गंदगी, दुर्गंध और मच्छरों की समस्या में भी कमी आने की संभावना है।

पार्षदों और आमजन की राय से तय होंगे स्थान

नगरपालिका मंडल दूनी के उपाध्यक्ष ओमप्रकाश जाट ने बताया कि प्रत्येक वार्ड में कचरा पात्र रखने के लिए संबंधित वार्ड पार्षदों एवं मोहल्लेवासियों से चर्चा कर उपयुक्त स्थान निर्धारित किए जाएंगे। इसके बाद सभी 20 वार्डों में कचरा पात्र रखवाकर नियमित कचरा संग्रहण की व्यवस्था शुरू की जाएगी।

कांग्रेस की केशर कंवर को हराया, भाजपा को 16 और कांग्रेस को मिले 11 मत; जीत के बाद मुख्य बाजार में निकाला विजय जुलूस

स्मार्ट हलचल



कोटड़ी कोटड़ी पंचायत समिति में उपप्रधान पद के लिए हुए निर्वाचन में भाजपा के प्रत्याशी कैलाश सुथार ने 5 मतों से जीत दर्ज कर उपप्रधान पद पर कब्जा जमाया। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी केशर कंवर को शिकस्त दी। मतदान में भाजपा प्रत्याशी कैलाश सुथार को 16 मत मिले, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी केशर कंवर को 11 मत प्राप्त हुए। निर्वाचन परिणाम घोषित होते ही भाजपा कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। जीत की घोषणा के बाद पंचायत समिति परिसर से बाहर निकलते ही कार्यकर्ताओं ने नवनिर्वाचित प्रधान कन्हैया लाल जाट एवं उपप्रधान कैलाश सुथारव मण्डल अध्यक्ष प्रहलाद सेन को कंधों पर उठा लिया। इसके बाद डीजे की धुन पर ढोल-नगाड़ों और नाचते-गाते कार्यकर्ताओं के साथ विजय जुलूस निकाला गया। जुलूस कोटड़ी के मुख्य बाजार से होते हुए श्री चारभुजानाथ मंदिर पहुंचा। रास्ते में जगह-जगह आतिशबाजी कर खुशी का इजहार किया गया तथा मिठाइयां बांटकर एक-दूसरे को जीत की बधाई दी गई। इस दौरान मंडल अध्यक्ष एवं पंचायत समिति सदस्य प्रहलाद सेन, पूर्व प्रधान एवं पंचायत समिति सदस्य करण सिंह सहित नवनिर्वाचित प्रधान, उपप्रधान और सभी निर्वाचित पंचायत समिति सदस्यों ने श्री चारभुजानाथ मंदिर में मत्था टेककर आशीर्वाद लिया। विजय जुलूस में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं समर्थक शामिल हुए।

तीन दशक से अधिक का राजनीतिक अनुभव

नवनिर्वाचित उपप्रधान कैलाश सुथार का राजनीतिक सफर भी खासा अनुभवपूर्ण रहा है। वे ककरोलिया घाटी से दो बार सरपंच निर्वाचित हो चुके हैं तथा तीन बार पंचायत समिति सदस्य रहे हैं। पिछले पंचायत समिति कार्यकाल में भी उन्होंने उपप्रधान का दायित्व निभाया था। इस बार पुनः उपप्रधान निर्वाचित होकर उन्होंने लगातार दूसरी बार इस पद की जिम्मेदारी संभाली है।

कोख में बेटी की पहचान करना अपराध, बेटियों के सम्मान का संदेश घर-घर पहुंचाएंगी आशा सहयोगिनियां



बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत कार्यशाला आयोजित, पीसीपीएनडीटी कानून के प्रावधानों की दी जानकारी

स्मार्ट हलचल । अनिल खीची

ब्यावर । बेटियों को जन्म लेने का अधिकार दिलाने और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से शनिवार को सिटी डिस्पेंसरी, ब्यावर में आशा सहयोगिनियों की जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। महिला अधिकारिता विभाग के निर्देशानुसार पन्नाधाय सुरक्षा एवं सम्मान केंद्र की ओर से बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के तहत संचालित 60 दिवसीय विशेष जागरूकता अभियान में पीसीपीएनडीटी अधिनियम-1994 की जानकारी दी गई। कार्यशाला में आशा सहयोगिनियों को गर्भधारण पूर्व एवं प्रसव पूर्व लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम के प्रावधानों से अवगत कराया गया। बताया गया कि गर्भस्थ शिशु के लिंग की जांच करना, करवाना अथवा लिंग संबंधी जानकारी देना कानूनन अपराध है। साथ ही कन्या भ्रूण हत्या रोकने, बालिकाओं के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने और बेटा-बेटी को समान अधिकार एवं महत्व देने पर जोर दिया गया। महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक जगदीश चौधरी ने कहा कि बेटियों के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाना और लिंगानुपात में सुधार करना बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना का प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने आशा सहयोगिनियों से अपने कार्यक्षेत्र में आमजन को कानून के प्रति जागरूक करने तथा बालिकाओं के जन्म, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

रायपुर पंचायत समिति में भाजपा का दबदबा बरकरार, मुकेश कुमावत 10 वोट लेकर बने उप प्रधान

प्रधान के बाद उपप्रधान पद पर भी भाजपा का कब्जा, कांग्रेस प्रत्याशी अनीता पारीक को मिले मात्र 4 वोट; निर्दलीय धर्मचंद गुर्जर ने नोटा को दिया वोट





स्मार्ट हलचल

गंगापुर पंचायत समिति रायपुर में प्रधान पद के चुनाव के बाद उपप्रधान पद के चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने शानदार जीत दर्ज कर अपना दबदबा कायम रखा। भाजपा उम्मीदवार मुकेश कुमावत 10 वोट प्राप्त कर उपप्रधान निर्वाचित हुए। वहीं कांग्रेस की ओर से उपप्रधान पद की उम्मीदवार अनीता पारीक को मात्र 4 वोट मिले। इस चुनाव में भी निर्दलीय उम्मीदवार धर्मचंद गुर्जर ने प्रधान चुनाव की तरह अपना मत नोटा के पक्ष में दिया।रायपुर पंचायत समिति के उपप्रधान चुनाव के परिणाम सामने आते ही भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई। चुनाव परिणाम ने एक बार फिर क्षेत्र की राजनीतिक चर्चाओं को गर्म कर दिया है। भाजपा ने प्रधान और उपप्रधान दोनों महत्वपूर्ण पदों पर जीत हासिल कर पंचायत समिति में अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत कर ली है। गौरतलब है कि प्रधान पद के चुनाव में भाजपा की उम्मीदवार केसर देवी जाट ने भी जीत दर्ज कर कांग्रेस को बड़ा राजनीतिक झटका दिया था। अब उपप्रधान पद पर मुकेश कुमावत की जीत के साथ ही रायपुर पंचायत समिति के दोनों प्रमुख पदों पर भाजपा का कब्जा हो गया है।

बहुमत नहीं होने के बावजूद भाजपा की दोनों पदों पर जीत बनी चर्चा का विषय

रायपुर पंचायत समिति के चुनाव परिणाम की सबसे खास बात यह रही कि पंचायत समिति सदस्य चुनाव में भाजपा के पास स्पष्ट बहुमत नहीं होने के बावजूद पार्टी ने प्रधान और उपप्रधान दोनों पदों पर जीत हासिल की। राजनीतिक जानकारों के अनुसार, यह परिणाम स्थानीय राजनीतिक समीकरणों, रणनीति और चुनावी प्रबंधन के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। दोनों पदों पर भाजपा प्रत्याशियों की जीत को क्षेत्रीय विधायक लादूलाल पितलिया के राजनीतिक प्रभाव और संगठनात्मक रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भाजपा को मिली इस सफलता से विधायक पितलिया का राजनीतिक कद बढ़ने की चर्चा भी तेज हो गई है। भाजपा के दोनों प्रत्याशियों की जीत के बाद पार्टी समर्थकों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने इसे संगठन की रणनीति और नेतृत्व की सफलता बताते हुए खुशी जाहिर की।

बपावर रोड पर चल रहे सड़क निर्माण में घटिया सामग्री का आरोप, ग्रामीणों ने की जांच की मांग

सड़क पर सीमेंट नजर नहीं आने का दावा, लीपापोती कर काम निपटाने का लगाया आरोप

स्मार्ट हलचल



सांगोद 28 नवम्बर को सांगोद बपावर रोड पर चल रहे सड़क निर्माण कार्य में घटिया सामग्री उपयोग करने का आरोप सामने आया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क निर्माण में ठोस सामग्री नहीं लगाई जा रही है, बल्कि ऊपर से लीपापोती कर काम निपटाया जा रहा है। ग्रामीणों के अनुसार सड़क पर सीमेंट तक नजर नहीं आ रहा है, जिससे नई बनी सड़क के जल्द ही उखड़ने की आशंका जताई जा रही है। लोगों ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाए हैं और प्रशासन से मौके पर जांच कराने की मांग की है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते जांच नहीं हुई तो सरकारी धन बर्बाद होगा और कुछ ही दिनों में सड़क फिर से खराब हो जाएगी। ग्रामीणों ने संबंधित विभाग के अधिकारियों से निर्माण कार्य में पारदर्शिता बरतने और मानकों के अनुसार सामग्री उपयोग कराने की मांग की है।

अलीगढ़ में निजी स्कूल के शौचालय बेसमेंट में घुसा पैंथर वन विभाग ने रेस्क्यू कर पकड़ा-ग्रामीणों ने ली राहत की सांस,

एक माह से अधिक समय से क्षेत्र में बना हुआ था पैंथर का मूवमेंट-शनिवार शाम 5 बजे सफल हुआ रेस्क्यू ऑपरेशन...

स्मार्ट हलचल

टोंक/अलीगढ़। उनियारा उपखंड क्षेत्र के अलीगढ़ कस्बे में पिछले एक माह से अधिक समय से पैंथर की लगातार आवाजाही से ग्रामीणों में बनी दहशत का माहौल आखिरकार शनिवार शाम सफल रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद समाप्त हो गया। कस्बे के सैय्यदों के मोहल्ले में सहादत नगर रोड के समीप स्थित सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल के शौचालय के बेसमेंट में घुसे पैंथर को वन विभाग की रेस्क्यू टीम ने शनिवार शाम करीब 5 बजे पिंजरे की मदद से सुरक्षित पकड़ लिया। पैंथर के पकड़े जाने की खबर से ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। जानकारी के अनुसार



शुक्रवार रात्रि से ही अलीगढ़ कस्बे के उक्त इलाके में पैंथर का मूवमेंट दिखाई देने की सूचनाएं सामने आ रही थीं। बताया जा रहा है कि पिछले एक माह से अधिक समय से क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर पैंथर की आवाजाही देखी जा रही थी। शनिवार दोपहर पैंथर सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल के शौचालय बेसमेंट में



जा घुसा। इसकी सूचना मिलते ही क्षेत्र में हड़कंप मच गया और वन विभाग को सूचित किया गया। सूचना पर वन विभाग की रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची। टीम ने स्कूल परिसर और बेसमेंट के आसपास सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए पैंथर को सुरक्षित पकड़ने के लिए पिंजरा लगाया और रेस्क्यू अभियान शुरू किया। दोपहर से जारी प्रयासों के बाद शाम करीब 5 बजे टीम को सफलता मिली और पैंथर को पकड़ लिया गया। रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा रही। किसी भी अप्रिय घटना से बचाव के लिए अलीगढ़ थाना पुलिस सहित भारी पुलिस जाप्ता तैनात रहा। वन विभाग की टीम और पुलिस की सतर्कता के चलते अभियान सफलतापूर्वक पूरा हुआ।

एक से दो अन्य पैंथरों की कथित मौजूदगी की भी चर्चा

पैंथर पकड़े जाने के बाद जहां ग्रामीणों ने राहत महसूस की, वहीं क्षेत्रवासियों के बीच एक से दो अन्य पैंथरों की मौजूदगी को लेकर भी चर्चा बनी हुई है। हालांकि अन्य पैंथरों की मौजूदगी की फिलहाल कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। ऐसे में वन विभाग से क्षेत्र में नियमित निगरानी रखने और संभावित मूवमेंट की जानकारी जुटाने की अपेक्षा की जा रही है।

ग्रामीणों की सुरक्षा को लेकर सतर्कता जरूरी

क्षेत्रवासियों ने प्रशासन एवं वन विभाग से मांग की है कि यदि क्षेत्र में अन्य पैंथरों की मौजूदगी सामने आती है तो उनके रेस्क्यू के लिए भी सुरक्षित अभियान चलाया जाए। खासकर आबादी क्षेत्रों, स्कूलों और ग्रामीण रास्तों के आसपास निगरानी बढ़ाई जाए, ताकि बच्चों, महिलाओं और आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

वन विभाग की अपील:

पैंथर या अन्य वन्यजीव दिखाई देने पर ग्रामीण घटनास्थल पर भीड़ जमा न करें, उसकी सूचना तत्काल वन विभाग व पुलिस को दे। वन्यजीव को घेरने, भगाने या पकड़ने का प्रयास बिल्कुल न करें तथा सुरक्षित दूरी बनाए रखें। तत्काल वन विभाग एवं पुलिस को सूचना दें और उनके निर्देशों का पालन करें।

संपादकीय

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027

भाजपा के सामने अखिलेश की चुनौती, बसपा की खामोशी और नए गठबंधन की अग्नि परीक्षा...



(डॉ. पंकज भारद्वाज)

स्मार्ट हलचल

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 की रणभेरी भले ही अभी पूरी तरह न बजी हो, लेकिन सियासी शतरंज पर मोहरों की चाल तेज हो चुकी है। सत्ता की कुर्सी पर तीसरी बार काबिज होने का सपना देख रही भाजपा के सामने जहाँ अपनी सत्ता और सियासी समीकरण बचाने की चुनौती है, वहीं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव इस बार सत्ता में वापसी की उम्मीद के साथ पहले से कहीं अधिक आक्रामक नजर आ रहे हैं। विपक्षी खेमे में नए गठबंधनों की दस्तक भी सुनाई देने लगी है। ऐसे में सवाल केवल यह नहीं है कि 2027 में सरकार किसकी बनेगी, बल्कि यह भी है कि कौन-सा राजनीतिक दल जनता की अपेक्षाओं, नाराजगी और बदलते सामाजिक समीकरणों को अपने पक्ष में करने में सफल होगा। समाजवादी पार्टी ने चुनावी तैयारियों में एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपना घोषणापत्र जारी कर दिया है। अखिलेश यादव ने इसे 'सत्ताईस का संकल्प, पीडीए का प्रणपत्र,जनमन का घोषणापत्र' नाम दिया है। इसमें रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पुरानी पेंशन, सामाजिक न्याय और बुनियादी सुविधाओं से जुड़े अनेक वादे किए गए हैं। सरकारी क्षेत्र में 25 लाख नौकरियाँ, बेरोजगार स्नातकों को पाँच हजार रुपये मासिक भत्ता, किसानों के लिए राहत, घरेलू उपभोक्ताओं को 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली और पुरानी पेंशन योजना की बहाली जैसे वादे सीधे उन वर्गों को आकर्षित करने का प्रयास हैं, जिनकी अपेक्षाएँ लंबे समय से राजनीतिक दलों के चुनावी एजेंडे का हिस्सा रही हैं। अखिलेश यादव ने घोषणापत्र के माध्यम से यह संदेश देने की कोशिश की है कि उनकी राजनीति केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक बदलाव की दिशा में भी केंद्रित है। हालांकि घोषणापत्र जारी कर देना और उन वादों को जमीन पर उतारना दो अलग-अलग बातें हैं। जनता अब केवल घोषणाओं से संतुष्ट होने वाली नहीं है। वह यह भी जानना चाहेगी कि इन वादों के लिए संसाधन कहाँ से आएँगे और उनका क्रियान्वयन किस प्रकार होगा। सपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने पुराने शासनकाल की छवि से आगे निकलकर कानून-व्यवस्था, विकास और सुशासन के मोर्चे पर विश्वसनीयता स्थापित करने की होगी। दूसरी ओर भाजपा के भीतर भी सब कुछ उतना सहज दिखाई नहीं दे रहा, जितना सार्वजनिक मंचों से प्रदर्शित किया जाता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है, लेकिन उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का यह बयान कि उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री का चेहरा कमल का फूल होगा, राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया है। सामान्य राजनीतिक दृष्टि से इसे पार्टी की सामूहिक नेतृत्व और चुनाव चिह्न के आधार पर चुनाव लड़ने की रणनीति कहा जा सकता है, लेकिन उत्तर प्रदेश की राजनीति के संदर्भ में इसके निहितार्थ तलाशे जाना स्वाभाविक है। सवाल उठता है कि जब प्रदेश में योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री हैं और भाजपा का चेहरा भी लंबे समय से वही रहे हैं, तब मुख्यमंत्री के चेहरे के सवाल पर कमल के फूल को आगे करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? क्या यह केवल केंद्रीय नेतृत्व की चुनावी रणनीति है या प्रदेश भाजपा में नेतृत्व को लेकर कोई अंतर्विरोध भी मौजूद है? फिलहाल इसे योगी के नेतृत्व पर सीधे सवाल अथवा किसी निश्चित राजनीतिक टकराव का प्रमाण मानना जल्दबाजी होगी, लेकिन इतना अवश्य है कि इस बयान ने चर्चाओं को हवा दी है। भाजपा के लिए चुनौती यह भी होगी कि वह चुनाव से पहले अपने संगठन और नेतृत्व के बीच समन्वय का संदेश जनता तक पहुँचाए। ओवैसी और चंद्रशेखर आजाद की राजनीतिक साझेदारी ने भी उत्तर प्रदेश के चुनावी परिदृश्य में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। दोनों नेताओं ने सामाजिक परिवर्तन मोर्चा बनाकर चुनाव लड़ने की घोषणा की है। चंद्रशेखर आजाद को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार भी घोषित किया गया है। यह गठबंधन दलित और मुस्लिम मतदाताओं के बीच अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रहा है। इसके बावजूद इस मोर्चे की वास्तविक ताकत का आकलन अभी कठिन है। किसी समुदाय की जनसंख्या और किसी राजनीतिक दल के पक्ष में उसके मतदान को एक ही तराजू पर नहीं तौला जा सकता। गठबंधन के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी लोकप्रियता को विधानसभा सीटों पर प्रभावी चुनावी परिणाम में बदलने की होगी। इस गठबंधन का प्रभाव सपा और बसपा, दोनों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दलित और मुस्लिम मतदाताओं के समीकरण चुनावी परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। हालांकि यह मान लेना कि इन वर्गों का मतदाता किसी एक गठबंधन के साथ स्वतः चला जाएगा, राजनीतिक अपरिपक्वता होगी। मतदाता की अपनी प्राथमिकताएँ, स्थानीय प्रत्याशी, संगठन और चुनावी परिस्थितियाँ भी निर्णायक भूमिका निभाती हैं। इस पूरे राजनीतिक परिदृश्य में बहुजन समाज पार्टी और मायावती की भूमिका सबसे अधिक चर्चा और जिज्ञासा का विषय बनी हुई है। कभी उत्तर प्रदेश की राजनीति में निर्णायक शक्ति रही बसपा आज अपने राजनीतिक अस्तित्व और पुराने जनाधार को पुनः संगठित करने की चुनौती से जूझ रही है। मायावती सार्वजनिक रूप से सक्रियता दिखा रही हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह सक्रियता चुनावी जमीन पर संगठनात्मक मजबूती में बदल रही है? उनके परंपरागत मतदाता भी इस बात को लेकर असमंजस में हैं कि पार्टी इस बार किस रणनीति के साथ मैदान में उतरेगी। हालांकि बसपा को पूरी तरह निष्क्रिय मानना भी उचित नहीं होगा। पार्टी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संगठनात्मक गतिविधियाँ तेज की हैं। आकाश आनंद को भी चुनावी तैयारियों में जिम्मेदारी दी गई है और छह दिसंबर को लखनऊ में प्रस्तावित कार्यक्रम को शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा जा रहा है। इसके बावजूद बसपा के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या वह अपने पुराने सामाजिक आधार को फिर से एकजुट कर पाएगी? मायावती की व्यक्तिगत राजनीतिक पहचान आज भी महत्वपूर्ण है, लेकिन चुनाव जीतने के लिए केवल पहचान पर्याप्त नहीं होती। बूथ स्तर का संगठन, निरंतर जनसंपर्क और स्पष्ट राजनीतिक रणनीति भी आवश्यक हैं। जहाँ तक भाजपा के मुकाबले की बात है, फिलहाल समाजवादी पार्टी ही प्रदेश में प्रमुख विपक्षी चुनौती के रूप में दिखाई देती है। अखिलेश यादव के पास संगठन, पूर्व शासन का अनुभव और पीडीए की राजनीतिक अवधारणा है। लेकिन ओवैसी-चंद्रशेखर गठबंधन तथा बसपा की संभावित वापसी विपक्षी मतों के समीकरण को प्रभावित कर सकती है। कांग्रेस की भूमिका और अन्य क्षेत्रीय दलों की रणनीति भी चुनावी तस्वीर को बदल सकती है। इसलिए अभी से मुकाबले को केवल भाजपा और सपा के बीच सीमित कर देना उचित नहीं होगा। वास्तव में 2027 का चुनाव उत्तर प्रदेश की राजनीति के लिए कई मायनों में निर्णायक होगा। भाजपा को अपने शासन की उपलब्धियों और नेतृत्व की स्पष्टता के आधार पर जनता के बीच जाना होगा। सपा को अपने वादों के साथ विश्वसनीयता स्थापित करनी होगी। बसपा को अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता सिद्ध करनी होगी, जबकि नए गठबंधन को यह दिखाना होगा कि वह केवल राजनीतिक घोषणाओं तक सीमित नहीं है। आखिर में उत्तर प्रदेश का मतदाता ही इस सियासी पहेली का उत्तर देगा कि वह किसे सत्ता सौंपेगा। यह जातीय समीकरणों, गठबंधनों और घोषणापत्रों से कहीं आगे जाकर रोजगार, महंगाई, कानून-व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसान और नौजवानों के सवालों पर तय होगा। राजनीतिक दलों के लिए अब सबसे बड़ी परीक्षा यही है कि वे जनता की नब्ज कितनी सही पहचान पाते हैं। 2027 की सियासी बिसात पर चालें भले ही नेताओं के हाथ में हों, लेकिन बाजी का अंतिम फैसला मतदाता के हाथ में ही रहेगा। (विनायक फीचर्स)

सम्पादकीय

अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र आज भी कायम

भारत चांद पर पहुंच चुका है, अंतरिक्ष विज्ञान में नित नई उपलब्धियां हासिल कर रहा है और डिजिटल क्रांति के माध्यम से आधुनिक तकनीक के नए युग में प्रवेश कर रहा है। देश में वैज्ञानिक सोच व आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के दावे भी किए जा रहे हैं। फिर भी, समाज में अंधविश्वास, तंत्र-मंत्र और रूढ़िवादी गतिविधियां मासूम जिंदगियों के लिए खतरा बनी हुई हैं। बुलंदशहर के अवंती नगर भूड़ में तीन साल की बच्ची की कथित तंत्र-मंत्र के लिए हत्या का मामला इस चिंताजनक सामाजिक वास्तविकता को उजागर करता है। इस हत्या के मामले में पुलिस ने 24 घंटे के भीतर आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन जो आरोप हैं, वे गंभीर हैं। कहा गया है कि आरोपी ने, जो पड़ोस में ही रहती थी, बच्ची की बलि देने के उद्देश्य से उसकी हत्या की। पुलिस जांच में महिला के कमरे से तंत्र-मंत्र से जुड़े होने के संदेह वाले चित्रों और दूसरे प्रतीकों के मिलने की बात सामने आई है। बेशक, मामले से जुड़े सभी तथ्यों और परिस्थितियों की जांच पड़ताल चल रही है और आशा है, पीड़ित परिवार को अदालत से न्याय मिल सकेगा, लेकिन इस तरह की घटना बताती है कि हमारा समाज आज भी कितना दकियानूस है।सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर 21वीं सदी के आधुनिक भारत में तंत्र-मंत्र और कथित बलि जैसी अमानवीय सोच कैसे जीवित है? जिस देश के वैज्ञानिक चंद्रयान और अंतरिक्ष अभियानों के माध्यम से दुनिया में अपनी पहचान बना रहे हैं, उसी देश में कुछ लोग अंधविश्वास के नाम पर मासूम बच्चों की जिंदगी से खिलवाड़ करने से भी पीछे नहीं हट रहे।

जवाबदेही से बचती ग्रामीण चिकित्सा व्यवस्था



राजकुमार आमेटा

स्मार्ट हलचल



फाइलों में चंगा, गांव में बेबस

हमारे ग्रामीण स्वास्थ्य तंत्र की कार्यशैली इतनी उन्नत हो चुकी है कि अब उसे मरीजों की सेहत से ज्यादा फाइलों की सेहत की फिक्र रहती है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की दीवारों पर चमकते 'निःशुल्क जांच और उपचार' के नारे पढ़कर लगता है मानो गांवों में चिकित्सा क्रांति आ गई हो। लेकिन अंदर कदम रखते ही हकीकत सामने आ जाती है–कहीं डॉक्टर साहब 'अनिश्चितकालीन अवकाश' पर हैं, तो कहीं जांच मशीनें सालों से बिजली के इंतजार में तपस्या कर रही हैं। प्रशासनिक उदासीनता का आलम यह है कि मुख्यालय पर होने वाली हर बैठक में ग्रामीण चिकित्सा व्यवस्था को 'शत-प्रतिशत सफल' घोषित कर दिया जाता है। असल में, अफसरों की नजर में अस्पताल का मतलब केवल ईंट-पत्थर का भवन खड़ा कर देना है; उसमें डॉक्टर और दवाइयां होना महज एक फिजूलखर्ची है। बेचारा ग्रामीण मरीज जब वहां पहुंचता है, तो उसे इलाज की जगह शहर जाने की सलाह मुफ्त मिलती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार को लेकर सरकारी मंचों से किए जाने वाले बड़े-बड़े दावों की पोल तब खुल जाती है, जब किसी गांव का गरीब मरीज बुखार या प्रसव पीड़ा में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की चौखट पर पहुंचता है और वहां उसे डॉक्टर की जगह बंद दरवाजे या 'रेफर' की पर्ची थमा दी जाती है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की यह बदहाली किसी संसाधन संकट का नहीं, बल्कि सीधे तौर पर प्रशासनिक उदासीनता और जवाबदेही के अभाव का नतीजा है।

विडंबना यह है कि कागजों पर स्वास्थ्य का बजट हर साल बढ़ रहा है और गांव-गांव में चमचमाती इमारतें भी खड़ी की जा रही हैं, लेकिन इन इमारतों में जान फूंकने वाला अमला नदारद है। कहीं चिकित्सकों के पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं, तो कहीं नियुक्त डॉक्टर और स्टाफ मुख्यालय से नदारद रहकर केवल हाजिरी रजिस्टर भरने की औपचारिकता निभा रहे हैं। लाखों रुपये की लागत से खरीदी गई जांच मशीनें धूल फांक रही हैं क्योंकि उन्हें चलाने के लिए तकनीशियन नहीं हैं। जिला मुख्यालयों के वातानुकूलित कमरों में बैठकर समीक्षा बैठकें करने वाले उच्चाधिकारियों को शायद इस बात का अंदाजा ही नहीं है कि एक ग्रामीण परिवार को मामूली इलाज के लिए भी कर्ज लेकर शहर के निजी अस्पतालों की ओर भागना पड़ रहा है। प्रशासनिक तंत्र अक्सर यह कहकर पल्ला झाड़ लेता है कि चिकित्सक ग्रामीण इलाकों में सेवाएं देने को तैयार नहीं हैं। लेकिन यह तर्क स्वीकार्य नहीं हो सकता। जब नियुक्ति और पदस्थापना के नियम तय हैं, तो उन पर सख्ती से अमल करवाना किसकी जिम्मेदारी है यदि सरकारी वेतन लेने के बावजूद कोई कर्मचारी अपनी ड्यूटी से नदारद रहता है या दवाओं की आपूर्ति में लापरवाही होती है, तो यह सीधे तौर पर निगरानी तंत्र की विफलता है। बिना जवाबदेही तय किए योजनाओं और भवनों पर खर्च होने वाला करोड़ों रुपये का बजट केवल निर्माण एजेंसियों का भला कर सकता है, आम मरीज का नहीं।

अब समय आ गया है कि स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली में ऊपर से नीचे तक कठोर जवाबदेही तय की जाए। केवल निचले स्तर के कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस थमाकर इतिश्री करने के बजाय, जिला स्तर के शीर्ष अधिकारियों को भी अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य केंद्रों की बदहालीह्व के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। औचक निरीक्षण, बायोमेट्रिक उपस्थिति की सख्त निगरानी और ड्यूटी से गायब रहने वाले कर्मियों पर कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई अनिवार्य की जाए। जब तक स्वास्थ्य सेवाओं को प्रशासन की सीधी जवाबदेही से नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक ग्रामीण जनता के हिस्से में केवल आश्वासन और बदहाली ही आती रहेगी।

विचार : आसान नहीं खाद्य सामग्री की गुणवत्ता सुधारना

पैकेटबंद खाद्य सामग्री के प्रभावी नियमन के साथ यह भी देखना होगा कि ठेलों, ढाबों आदि में बनने और बिकने वाली खान-पान की सामग्री की गुणवत्ता भी सुधरे। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण यानी एफएसएसएआइ ने वर्षों तक इस पर विचार किया कि पैकेटबंद खाद्य उत्पादों पर किस तरह के क्या चेतावनी संदेश दिए जाने चाहिए, लेकिन किन्हीं कारणों से किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सका। इसका परिणाम यह हुआ कि एफएमसीजी कंपनियां पैकेटबंद खाद्य एवं पेय पदार्थों की गुणवत्ता के मानकों की उपेक्षा करती रहीं। समय के साथ पैकेटबंद खाद्य पदार्थों का चलन तो बढ़ा, लेकिन उनकी गुणवत्ता को लेकर सवाल उठने बंद नहीं हुए। इन सवालों के घेरे में विदेशी कंपनियां भी आती रहीं। अंततः पैकेटबंद खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के मानक तय करने की मांग वाली एक याचिका की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने एफएसएसएआइ को आदेश दिया कि वह पैकेटबंद खाद्य पदार्थ बनाने वाली कंपनियों को अपने उत्पादों में प्रमुखता से ऐसे लेबल अंकित करने के निर्देश दे कि उनमें कितना फैट यानी वसा, नमक और चीनी है। कंपनियों के लिए स्पष्ट दिखने वाले ऐसे अलग-अलग सचित्र लेबल लगाना अनिवार्य होगा, ताकि कम पढ़े-लिखे लोगों को भी पता चल सके कि किस सामग्री में अधिक वसा, अधिक नमक और अधिक चीनी है।

आउटसोर्सिंग : उपेक्षा के भंवर में श्रम बल



हेमेन्द्र क्षीरसागर, पत्रकार, लेखक व स्तंभकार

स्मार्ट हलचल



सरकारी दफ्तरों, अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों, आयुष विभाग, स्कूलों, पंचायत, राजस्व, कृषि, गृह, बिजली कंपनियों और नगर पालिका, निगमों की व्यवस्था को धरातल पर संचालित करने वाला विशाल श्रम बल आज अपनी ही पहचान और अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। सरकार और जनता के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी बने ये आउटसोर्स कर्मचारी राज्य की प्रशासनिक संरचना की रीढ़ हैं। हालांकि, जिस व्यवस्था के सहारे सरकारी मशीनरी का पहिया घूम रहा है। वही व्यवस्था इन कर्मचारियों के लिए आर्थिक शोषण और मानसिक असुरक्षा का कारण बन चुकी है। वाकई में श्रमिकों को शोषण का नायाब तरीका अजीब है। लेकिन अजीबोगरीब है कि इसका समाधान जानबूझकर नहीं निकाला जा रहा है।

ठेकेदारी प्रथा का चक्रव्यूह

राज्य में निजी एजेंसियों और वेंडरों के माध्यम से आउटसोर्सिंग की व्यवस्था लागू की गई थी ताकि प्रशासनिक दक्षता बढ़ सके। लेकिन व्यवहार में यह प्रणाली श्रम के शोषण का पर्याय बन गई है। कुशल और तकनीकी कार्य करने के बावजूद कर्मचारियों को मिलने वाला मानदेय बेहद कम है। वह भी शासन द्वारा निर्धारित वेतन से हर माह 2-4 हज़ार कटौती कर दिया जाता है। इसमें ठेकेदार भी क्या करें जितना उन्हें मिलता है उस में से अपना कमिशन काटकर तो भुगतान करेंगे। अपनी जेब से थोड़े ही देंगे, वह भी तो कमाने बैठे है। यह सब सरकार के देखरेख में हो रहा है, कुछ छुपा नहीं है। विपदा में मुसिबत का मारा श्रमिक ठेकेदारी प्रथा के चक्रव्यूह में फंसकर तड़पने को मजबूर हैं।

महिनों लटकती मजदूरी

अलबत्ता कई विभागों में 3 से 6 महीने तक मजदूरी अटका रहना आम बात हो चुकी है। ईपीएफ, ईएसआई और अन्य सामाजिक सुरक्षा कटौतियों के नाम पर एजेंसियां मनमानी करती हैं। कर्मचारियों के खातों में पारदर्शी तरीके से राशि जमा नहीं होती। बिना किसी पूर्व नोटिस के नौकरी से निकाल दिए जाने का स्थायी डर कर्मचारियों के मनोबल और कार्यक्षमता दोनों को प्रभावित करता है। ऊपर से अनचाहे जगह में स्थानांतरण की तलवार हरदम लटकती रहना आम बात है। मजे की बात इन्हें श्रम कानून के तहत न्यूनतम मजदूरी दर से से कम मजदूरी मिलना आम है।

समान कार्य, असमान वेतन

एक ही जगह पर नियमित कर्मचारी के बराबर या उससे अधिक घंटे काम करने वाले आउटसोर्स कर्मी को उसका एक-तिहाई वेतन भी नसीब नहीं होता। इतने कम अल्प वेतन में जीवन दूभर है। पर ना जाने क्यों जिम्मेदारों की जानबूझकर अनदेखी इन पर बनी रहती है। वहीं मातृत्व अवकाश, दुर्घटना बीमा या गंभीर बीमारी की स्थिति में मिलने वाले चिकित्सकीय लाभ जैसी बुनियादी सुविधाएं भी इनके लिए दूर की कौड़ी हैं। यह असमानता केवल प्रशासनिक खामी नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय के सिद्धांतों का सीधा उल्लंघन है।

समस्याओं का स्थायी समाधान

इस संकट से उबरने के लिए तात्कालिक पैचवर्क के बजाय एक दूरदर्शी और ठोस नीतिगत बदलाव की आवश्यकता है। ठेकेदारी व्यवस्था को समाप्त कर राज्य स्तर पर एक कर्मचारी कल्याण बोर्ड या निगम का गठन किया जाए। जो पारदर्शी तरीके से आउटसोर्सिंग कर्मचारियों का नियोजन और प्रबंधन करे। मानदेय का भुगतान एजेंसियों के खातों से हटाकर सीधे कर्मचारियों के बैंक खातों में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से किया जाए। जीवन-यापन की वास्तविक लागत के आधार पर न्यूनतम वेतन तय हो और इसे महंगाई सूचकांक से जोड़ा जाए। साथ ही आयु सीमा में छूट देकर नियमित शासकीय भर्तियों में इनके अनुभव का बोनस अंक दिया जाए। इन्हें रिक्त पदों में पदस्थ किया जाए।

संवेदनशील दृष्टिकोण

देश- प्रदेश को यदि आत्मनिर्भर और सुशासित राज्य की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना है, तो उसे अपनी आधारभूत श्रम शक्ति की उपेक्षा बंद करनी होगी। आउटसोर्स कर्मचारी केवल वेंडर के आंकड़ों का हिस्सा नहीं, बल्कि राज्य के विकास के साझेदार हैं। सरकार को चाहिए कि वह संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाते हुए इनके अधिकारों की रक्षा के लिए एक जवाबदेह और स्थायी नीति लागू करे। कुल मिलाकर इन श्रमवीरों को ब्राह्य स्रोत से निकाल कर आंतरिक स्रोत में शामिल किया जाना ही एकमेव विकल्प है, बस जरूरत है तो दृढ़ इच्छाशक्ति की।

टाटा संस की 30 नवंबर की बोर्ड बैठक पर रोक लगाने से बंबई उच्च न्यायालय का इनकार

मुंबई , एजेंसी। बंबई उच्च न्यायालय ने टाटा संस के कार्यकारी चेयरमैन के रूप में एन चंद्रशेखरन की पुनर्नियुक्ति को चुनौती देने वाली टाटा ट्रस्ट की याचिकाओं पर शुक्रवार को तत्काल राहत देने से इनकार कर दिया.

अदालत ने कहा कि टाटा संस के निदेशक मंडल की 30 नवंबर को होने वाली बैठक निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप हो सकती है, लेकिन उसमें लिए गए किसी भी फैसले का भविष्य अदालत के अंतिम आदेश पर निर्भर करेगा. न्यायमूर्ति अभय आहूजा की पीठ ने कहा, ''हम आज कोई राहत नहीं दे रहे हैं. 30 नवंबर की बैठक निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप होने दीजिए. बैठक में लिए गए किसी भी फैसले का भविष्य हमारे अंतिम आदेश पर निर्भर करेगा.''



टाटा ट्रस्ट से जुड़े सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट (एसडीटीटी) और आरडी टाटा ट्रस्ट (आरडीटीटी) ने चंद्रशेखरन को तीसरी बार चेयरमैन नियुक्त किए जाने के फैसले को चुनौती देते हुए टाटा संस और उसके छह निदेशकों के खिलाफ दो याचिकाएं दायर की हैं. दोनों ट्रस्ट ने अदालत से बोर्ड की बैठक टालने या उस पर रोक लगाने अथवा चंद्रशेखरन को कार्यकारी चेयरमैन के रूप में अपना मत देने से रोकने का अनुरोध किया था.

याचिकाओं के मुताबिक, 17 सितंबर को चंद्रशेखरन की पुनर्नियुक्ति के संबंध में टाटा संस के निदेशक मंडल का प्रस्ताव अमान्य था, क्योंकि इसे कंपनी के अंतर्नियमों के अनुच्छेद 121 के तहत जरूरी समर्थन मत नहीं मिले थे. यह विवाद टाटा समूह की प्रमुख कंपनी टाटा संस को शेयर बाजार में सूचीबद्ध कराने के मुद्दे पर टाटा ट्रस्ट और कंपनी प्रबंधन के बीच उभरे मतभेदों के बीच सामने आया है. टाटा संस में करीब 66 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाले टाटा ट्रस्ट कंपनी को गैर-सूचीबद्ध बनाए रखने के पक्ष में हैं. वहीं, टाटा संस का शीर्ष नेतृत्व इसकी वकालत कर रहा है.

इस विवाद के बीच दायर याचिकाओं में तत्काल राहत के तौर पर यह अनुरोध भी किया गया था कि 30 नवंबर की बैठक में नामित निदेशकों के बीच मतभेद होने की स्थिति में टाटा संस के चेयरमैन अपने

टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी ने ओम बिरला को लिखा पत्र, कल्याण बनर्जी का निलंबन रद्द करने की मांग

कोलकाता, एजेंसी। तृणमूल कांग्रेस के लोकसभा नेता अभिषेक बनर्जी ने शुक्रवार को अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी का निलंबन वापस लेने की मांग की है। उन्होंने नियम 374(2) का उल्लेख करते हुए कहा कि निलंबन जारी रहने से पार्टी के मुख्य सचेतक आगामी विशेष बैठक में भाग नहीं ले सकेंगे। कल्याण बनर्जी को मानसून सत्र के दौरान कथित आपत्तिजनक भाषा के कारण निलंबित किया गया था। लोकसभा में तृणमूल कांग्रेस के नेता अभिषेक बनर्जी ने शुक्रवार को अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी का निलंबन समाप्त करने का अनुरोध किया। संसद की विशेष बैठक 30 नवंबर को होगी। अभिषेक बनर्जी ने पत्र में कहा कि निलंबन जारी रहने से कल्याण बनर्जी सदन की कार्यवाही में हिस्सा नहीं ले पाएंगे ।

भजनों की स्वर लहरियों पर झूमे भक्त, दादी धाम में साकार हुआ नारायणी विवाह का दिव्य उत्सव

मेहंदी, हल्दी और जयमाला की रस्मों ने बांधा समां, दादीजी को छप्पन भोग अर्पित कर श्रद्धालुओं ने की मंगल कामना

स्मार्ट हलचल । अनिल खीची

ब्यावर। अजमेर रोड स्थित श्री मंदिर दादी धाम में आयोजित दादीजी के संगीतमय मंगलपाठ में भक्ति, उल्लास और श्रद्धा का अनूठा संगम देखने को मिला। भजनों की मधुर स्वर लहरियों के बीच नारायणी जन्म से लेकर विवाह उत्सव तक के प्रसंगों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। मेहंदी, हल्दी, जयमाला और चुनरी उत्सव की प्रस्तुतियों पर श्रद्धालु भावविभोर होकर झूम उठे। श्यामाश्याम वंदना परिवार के गोपाल वर्मा ने मधुर वाणी में मंगलपाठ प्रस्तुत किया। गणेश वंदना, शिव स्तुति, बजरंग आराधना एवं पितर वंदना के साथ नारायणी जन्म, विद्याध्ययन और विवाह प्रसंगों को चौपाइयों एवं भजनों के माध्यम से जीवंत किया। 'हाथां में दादी मेहंदी मांडण आया हां', 'महेंदी रची थारे हाथां में' और 'हो रही जय-जयकार दादीजी थारे मंदिर में' जैसे भजनों ने श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। सजी-धजी बारात के साथ पहुंचे तनधनदास ने नारायणी को जयमाला पहनाकर वरण किया। दादी परिवार न्यास के महामंत्री केदार गर्ग ने बताया कि बुधराज, गोगराज एवं बच्छराज अग्रवाल परिवार के सौजन्य से आयोजित मंगलपाठ में दादीजी के गर्भगृह का मनमोहक श्रृंगार किया गया। गोंदगिरी के लड्डू, केसरिया जलेबी, तिलपट्टी, गजक और रेवड़ी सहित छप्पन भोग अर्पित किए गए। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष माणक डाणी ने किया। मंदिर ट्रस्ट के बद्रीप्रसाद गर्ग, रमेश सिंघल एवं सुशील गर्ग ने अतिथियों का माला पहनाकर एवं उपरना ओढ़ाकर स्वागत किया। इस अवसर पर अजय, विजय, राहुल, संदीप, अविमदन, रमेश, महेंद्र अग्रवाल, प्रमोद अग्रवाल, देवेंद्र, मुकेश अग्रवाल, मंजुला, उर्मिला, शशि, संगीता, नीता, स्नेहलता, नेहा, वीणा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।



अब मोबाइल फोन से ही रेड-ग्रीन हो सकेंगे मोहाली के ट्रैफिक सिग्नल, गमाडा ला रहा हाईटेक सिस्टम

मोहाली, एजेंसी। मोहाली में अब ट्रैफिक सिग्नल की लाल और हरी बत्ती सिर्फ तय समय के हिसाब से ही नहीं चलेगी, बल्कि जरूरत पड़ने पर पुलिसकर्मी मोबाइल फोन पर एप के जरिए भी इन्हें नियंत्रित कर सकेंगे।

शहर को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में ग्रेटर मोहाली एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (गमाडा) एक तकनीकी पहल करने जा रहा है। इसके तहत पहली बार एंड्रायड पुलिस कंट्रोल एप आधारित हाईटेक ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम स्थापित करने की तैयारी की गई है। योजना के तहत चार प्रमुख चौराहों पर आधुनिक ट्रैफिक सिग्नल लगाए जाएंगे।

पुलिस के हाथों में होगा कंट्रोलः इस परियोजना का सबसे खास पहलू पुलिस के हाथ में आने वाला मोबाइल कंट्रोल होगा। अभी किसी वीआईपी मूवमेंट या विशेष प्रोटोकाल के दौरान किसी सड़क पर यातायात रोकने या किसी दूसरे मार्ग को खोलने के लिए पुलिसकर्मियों को मौके पर



ट्रैफिक व्यवस्था संभालनी पड़ती है।

कई बार चौराहों पर सिग्नल के संचालन में भी बदलाव की जरूरत होती है। लेकिन नई व्यवस्था में पुलिस कंट्रोल एप के जरिए संबंधित ट्रैफिक सिग्नल को जरूरत के अनुसार रेड या ग्रीन किया जा सकेगा। यानी पुलिसकर्मी मोबाइल के माध्यम से ही ट्रैफिक सिग्नल के संचालन में बदलाव कर सकेंगे। इससे वीआईपी काफिले के गुजरने, विशेष प्रोटोकाल और अन्य जरूरी परिस्थितियों में यातायात को नियंत्रित करना आसान हो सकता है। गमाडा ने इस प्रोजेक्ट के लिए शहर के चार महत्वपूर्ण जंक्शनों को चुना है। इनमें सीपी-67-सेक्टर-78, 79, 68 और 69 का जंक्शन, सोहाना मल्टी डायरेक्शनल चौक तथा 164 फुट चौड़ी बावा व्हाइट हाउस रोड और 300 फुट चौड़ी एयरपोर्ट रोड का जंक्शन शामिल है। इन सभी स्थानों पर नए ट्रैफिक सिग्नल लगाने के साथ उन्हें नवीनतम एंड्रायड पुलिस कंट्रोल एप आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम से जोड़ा जाएगा।

पुलिस के लिए तकनीकी हथियारः इस योजना को सामान्य ट्रैफिक सिग्नल लगाने की परियोजना से अलग माना जा रहा है। इसमें पुलिस को तकनीक के माध्यम से यातायात संचालन में बदलाव करने की सुविधा देने का प्रावधान है। खासकर उन परिस्थितियों में, जब किसी एक मार्ग को कुछ समय के लिए खाली रखना हो और दूसरे मार्गों से वाहनों की आवाजाही नियंत्रित करनी हो, तब यह सिस्टम उपयोगी साबित हो सकता है।

जिम के लेडीज टॉयलेट में यौन शोषण के बाद किया था ब्लैकमेल, ट्रेनर को 20 साल की सजा

हैदराबाद, एजेंसी। तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद के रायदुर्गम में 40 वर्षीय महिला का यौन उत्पीड़न करने के दोषी एक जिम ट्रेनर को शुक्रवार को अदालत ने 20 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। रंगारेड्डी जिले के 13वें अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने फैसला सुनाया। यह निर्णय गचीबोवली की एक पॉश गेटेड कम्युनिटी में हुई इस वारदात के नौ साल बाद आया है।



दो साल तक किया यौन उत्पीड़नः मेहदीपट्टनम का रहने वाला 39 वर्षीय दोषी गचीबोवली की एक हाई-एंड गेटेड कम्युनिटी के जिम में ट्रेनर के तौर पर काम करता था। शिकायतकर्ता महिला ने आरोप लगाया था कि आरोपी ने महिला शौचालय के अंदर यौन उत्पीड़न किया। उसने जनवरी 2015 से फरवरी 2017 के बीच महिला को लगातार प्रताड़ित किया। रायदुर्गम पुलिस ने बताया कि आरोपी ने कई बार महिला के फ्लैट में जबरन घुसपैठ भी की, उनका यौन शोषण किया और उन्हें डराया-धमकाया।

ब्लैकमेलिंग से तंग आकर दर्ज कराई थी शिकायतः पुलिस के अनुसार, आरोपी ने महिला के परिवार की प्रतिष्ठा खराब करने की धमकी दी थी और उन्हें ब्लैकमेल करने की भी कोशिश की। आखिरकार, महिला ने हिम्मत जुटाकर अपने पति को अपनी आपबीती बताई। पति के सहयोग से उन्होंने फरवरी 2017 में रायदुर्गम पुलिस से संपर्क किया और आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था और बाद में अदालत में चार्जशीट दाखिल की। लंबी सुनवाई के बाद शुक्रवार को अदालत ने उसे दोषी करार देते हुए सजा सुनाई। ट्रेनर मोहम्मद मौजम अली पर 8 हजार का जुर्माना भी लगाया गया है।

जयपुर में मां और बहन की हत्या के बाद युवक ने की आत्महत्या, दीवार पर चिपका मिला सुसाइड नोट

जयपुर, एजेंसी। शहर के भट्ठा बस्ती पुलिस थाना क्षेत्र में एक घर में मां और पुत्री में किसी बात को लेकर विवाद हो रहा था। विवाद बढ़ता देख पुत्र ने मां और बहन की हत्या कर दी। उसके बाद फंदे से लटक कर आत्महत्या कर ली। तीनों की मौत की जानकारी शुक्रवार सुबह करीब आठ बजे मिली। तीनों के शव घर के एक ही कमरे में मिले हैं। कमरे में दीवार पर एक कागज चिपका मिला है, जिसमें लिखा था कि मेरा सुसाइड नोट मोबाइल फोन में है। इसमें युवक ने खुद को मानसिक बीमार बताया है। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त बजरंग सिंह ने बताया कि शवों की पहचान सरोज देवी, शिवांगी और लक्की (27) के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जांच में सामने आया कि मां और बेटी के विवाद से युवक ने दोनों की धारदार हथियार से हत्या कर कमरे में फांसी लगा ली। पुलिस के अनुसार, शुक्रवार सुबह सरोज के पिता दीप तिवारी ने उसके पड़ोसी को फोन कर कहा कि वह गुरुवार से फोन रिसीव नहीं कर रही है। इस पर पड़ोसी ने घर में जाकर देखा तो तीनों शव एक कमरे में मिले।

सूरौठ के एरिक सिंह का हॉकी में राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ चयन

स्मार्ट हलचल



सूरौठ। राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद हॉकी प्रतियोगिता 19 वर्ष में सूरौठ के खिलाड़ी एरिक सिंह पुत्र गब्बर सिंह का चयन हुआ है। शारीरिक शिक्षा के व्याख्याता वीरेंद्र सिंह राजावत एवं प्रधानाचार्य अवधेश शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर की हॉकी प्रतियोगिता 8 से 12 दिसंबर 2026 तक लुधियाना (पंजाब) में आयोजित होगी। खिलाड़ी का चयन महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय अंग्रेजी माध्यम, जगदीशपुरा में आयोजित चयन प्रक्रिया के माध्यम से किया गया। सूरौठ के विवेकानंद उच्च माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थी एरिक सिंह ने पिछले दिनों राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया था।

डिलीट कर देती थी कॉल लॉग व चैट, बेटे के फोन की सीडीआर निकालेगी पुलिस

गाजियाबाद धीमा जहर केस में नया खुलासा

साहिबाबाद, एजेंसी। इंदिरापुरम थाना क्षेत्र में एक पत्नी द्वारा पति, बेटे व भांजे को खाने में धीमा जहर देने के मामले में जांच के दौरान कई अहम तथ्य प्रकाश में आए हैं। पता चला है कि पत्नी के कथित प्रेमी बबलू से मायके वालों के अच्छे संबंध हैं। वह मायके वालों के साथ अक्सर महिला के घर आता-जाता था। वहीं महिला के मोबाइल फोन से पुलिस को अभी कुछ ठोस सुराग हाथ नहीं लगे हैं। पूछताछ में महिला की बेटी ने बताया है कि मम्मी अक्सर भाई का फोन इस्तेमाल करती थीं और बात करने के बाद कॉल व मैसेज डिटेल डिलीट कर देती थीं। इसके चलते पुलिस अब बेटे के मोबाइल फोन की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) निकालेगी और उसकी जांच करेगी। वहीं जल्द ही पुलिस महिला से डासना जेल में जाकर पूछताछ करेगी।



कथित प्रेमी के मायके वालों से अच्छे संबंधः बता दें कि वसुंधरा 2सी निवासी सुशील कुमार भटनागर का अपनी पत्नी से विवाद चल रहा था। पत्नी अक्सर पति से किसी न किसी बात पर लड़ती-झगड़ती रहती थी। इसी बीच पति की दो माह पूर्व तबीयत खराब हो गई और उन्हें अस्पताल में आईसीयू में भर्ती किया गया। डॉक्टरों ने जब उनकी जांच की तो शरीर में जहरीले तत्वों का पता चला। चिकित्सकों को शक हुआ तो दोबारा जांच कराई गई, लेकिन फिर से रिपोर्ट में जहरीला तत्व अधिक मात्रा में पाया गया। पता चला कि उनके खून में लेड की मात्रा अधिक है। चिकित्सकों ने पूछताछ की तो पता चला कि उनका पत्नी से विवाद चल रहा है और ससुराल पक्ष में ज्वैलरी का काम होता है। इस पर चिकित्सकों को शक हुआ, क्योंकि लेड ज्वैलरी में इस्तेमाल होता है। उन्होंने इस बारे में पीड़ित को बताया कि यह तो साफ तौर पर पुलिस केस है। पीड़ित ने तत्काल पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने मंगलवार को मामले में केस दर्ज कर आरोपित पत्नी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

दो करोड़ का जीवन बीमा कराया था पति नेः जांच में पता चला था कि पति ने कुछ समय पूर्व अपना दो करोड़ रुपये का जीवन बीमा कराया था, इसके साथ ही उनकी ट्रैवल एजेंसी भी पांच से छह करोड़ की है। दोनों में उन्होंने पत्नी को ही नॉमिनी बनाया हुआ है। इसे हड़पने और अपने प्रेमी के साथ रहने के लिए आरोपित ने अपने स्वजन के साथ मिलकर यह साजिश रची थी। डीसीपी ट्रांस हिंडन रिजुल का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है। मामले में अन्य लोगों की संलिप्तता मिलने पर उन्हें भी गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

राजस्थान पंचायत समिति प्रधान चुनावः कांग्रेस ने भाजपा से ज्यादा प्रधान बनाए, 419 में से 255 सीटों पर कब्जा

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के पंचायत चुनाव में सत्तारूढ़ भाजपा के मुकाबले कांग्रेस का जीत का सिलसिला लगातार जारी है। प्रदेश की 419 पंचायत समितियों के प्रधान पद के लिए शुक्रवार को मतदान हुआ। देर शाम घोषित चुनाव परिणाम में 255 पंचायत समितियों में कांग्रेस के प्रधान निर्वाचित हुए हैं। वहीं भाजपा ने 105 पंचायत समितियों में अपनी पार्टी के प्रधान बनाए हैं।

राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) ने 24, माकपा ने दो पंचायत समितियों में अपने प्रधान बनाए हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्वाचन क्षेत्र सांगानेर में आरएलपी की सीमा चौधरी प्रधान निर्वाचित हुई है।

भाजपा और कांग्रेस ने यहां अपने प्रत्याशी मैदान में नहीं उतारे थे। कांग्रेस और सीएम के गृह जिले भरतपुर की सात में से पांच पंचायत समितियों में भाजपा और दो में कांग्रेस के प्रधान बने हैं।

कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के गृह जिले सीकर और



आरएलपी के अध्यक्ष हनुमान बेनीवाल के गृह जिले नागौर में भाजपा का खाता नहीं खुल सका है।

सीकर की 16 पंचायत समितियों में से कांग्रेस की 15 और एक में निर्दलीय की जीत हुई है। नागौर की 12 पंचायत समितियों में से आरएलपी ने आठ, कांग्रेस ने चार स्थानों पर अपने प्रधान बनाए।

पूर्व सीएम अशोक गहलोत के गृह जिले जोधपुर की 23 पंचायत समितियों में से भाजपा को मात्र एक स्थान पर जीत मिली है।

कांग्रेस के 3,701 और भाजपा के 2,181 पंचायत समिति सदस्य निर्वाचित हुए थे। भाजपा इस बात पर संतोष कर रही है कि 63 में बहुमत होने के बावजूद उसकी 105 पंचायत समितियों में प्रधान निर्वाचित हुए हैं।

सूरौठ क्षेत्र की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को दिया प्रशिक्षण, दैनिक कार्य प्रणाली को प्रभावी बनाने के गुर सिखाए



स्मार्ट हलचल

सूरौठ। कस्बे के राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल परिसर में शनिवार को सेक्टर सूरौठ की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया। आंगनवाड़ी सुपरवाइजर शशि बाला ने ने बताया कि महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आयोजित शिविर में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के क्षमता वर्धन हेतु प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण शिविर में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रशिक्षण की शुरुआत आंगनवाड़ी सुपरवाइजर शशि बाला एवं जिला समन्वयक फौजदार सुरजीत सिंह ने विधिवत रूप से की। उन्होंने बताया कि रॉकेट लर्निंग के मिशन बुनियाद कार्यक्रम के तहत करौली जिले में पिछले दो वर्षों से चल रहा है। प्रशिक्षण शिविर का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं की कार्य क्षमता एवं दैनिक कार्य प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाना है। इस दौरान कार्यकर्ताओं की दैनिक दिनचर्या कैलेंडर, कैलेंडर के माध्यम से गतिविधियों का चयन एवं संचालन अभिभावक बैठक को बेहतर एवं प्रभावी बनाने के तरीकों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों के आंकलन प्रपत्र तथा पोर्टफोलियो सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

राष्ट्रीय आदिवासी एकता मंच ने मीनाक्षी आपोतीकर को बनाया महाराष्ट्र प्रदेश महिला अध्यक्ष

विदर्भ के अकोला की आदिवासी महिला नेतृत्वकर्ता को मिली महत्वपूर्ण जिम्मेदारी, राष्ट्रीय अध्यक्ष यशवंत सिंह दरबार के नेतृत्व में महाराष्ट्र में महिला संगठन का होगा विस्तार

स्मार्ट हलचल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय आदिवासी एकता मंच ने महाराष्ट्र में संगठनात्मक विस्तार और आदिवासी महिला नेतृत्व को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण नियुक्ति की है। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के अकोला की सक्रिय आदिवासी महिला नेतृत्वकर्ता मीनाक्षी आपोतीकर को आदिवासी एकता विचार मंच की महाराष्ट्र राज्य महिला प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति राष्ट्रीय आदिवासी एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यशवंत सिंह दरबार एवं राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमति राजू मीणा के नेतृत्व में तथा



राष्ट्रीय महासचिव राकेश मीणा के निर्देशन पर महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष रमेश गोंड द्वारा की गई है। मीनाक्षी आपोतीकर अपनी प्रभावशाली वक्तृत्व कला, शानदार संवाद क्षमता और सामाजिक सक्रियता के लिए जानी जाती हैं। आदिवासी समाज के मुद्दों पर उनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति और संगठनात्मक गतिविधियों में रुचि को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है।

महाराष्ट्र में महिला संगठन को करेंगी मजबूत

मीनाक्षी आपोतीकर के नेतृत्व में महाराष्ट्र में आदिवासी महिलाओं को संगठन से जोड़ने, शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने, महिलाओं के सामाजिक एवं संवैधानिक अधिकारों की आवाज बुलंद करने और नई महिला नेतृत्वकर्ता तैयार करने की दिशा में कार्य किया जाएगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष यशवंत सिंह दरबार एवं राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमति राजू मीणा के मार्गदर्शन में संगठन देशभर में आदिवासी समाज की एकता, शिक्षा, अधिकार और महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय महासचिव राकेश मीणा ने संगठनात्मक विस्तार में महिला नेतृत्व की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया। मीनाक्षी आपोतीकर की नियुक्ति से महाराष्ट्र में आदिवासी महिलाओं को संगठनात्मक मंच पर अपनी भागीदारी बढ़ाने का अवसर मिलेगा। राष्ट्रीय आदिवासी एकता मंच ने विश्वास जताया कि मीनाक्षी आपोतीकर नई जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए संगठन की विचारधारा और उद्देश्यों को महाराष्ट्र के गांव-गांव तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएंगी।

गांवों में जली जागरूकता की मशाल, बाल विवाह के खिलाफ महिलाओं ने खोला मोर्चा

गोहाना में मशाल जुलूस तो सुरड़िया में मोमबत्ती जलाकर लिया संकल्प, 30 नवंबर से जिलेभर में निकलेगा बाल विवाह मुक्ति रथ...

स्मार्ट हलचल । अनिल कुमार

खीची ब्यावर । बाल विवाह के खिलाफ अब गांवों में भी जागरूकता की आवाज बुलंद होने लगी है। अंतरराष्ट्रीय बाल विवाह निषेध दिवस के अवसर पर गोहाना और सुरड़िया ग्राम पंचायतों में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। गोहाना में महिलाओं ने मशाल जुलूस निकालकर बाल विवाह के विरोध में एकजुटता दिखाई, वहीं सुरड़िया में मोमबत्तियां जलाकर ग्रामीणों ने अपनी पंचायत को बाल विवाह मुक्त बनाने की शपथ ली। बाल अधिकारिता विभाग एवं दिशा आर.सी.डी. समाजसेवी संस्था की जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन परियोजना के तहत गोहाना में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच मीना देवी, उपसरपंच मनोज सिंह एवं वार्ड पंचों ने ग्राम पंचायत को बाल विवाह मुक्त बनाने का संकल्प



लिया। इसके बाद महिलाओं ने मशाल जुलूस निकालकर ग्रामीणों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया। जुलूस में बाल विवाह विरोधी नारों के माध्यम से बेटियों को शिक्षा से जोड़ने और उनकी पढ़ाई बीच में नहीं छुड़वाने का संदेश दिया गया। समापन पर सभी ने बाल विवाह मुक्त भारत बनाने की सामूहिक शपथ ली। वहीं सुरड़िया ग्राम पंचायत में नवनियुक्त सरपंच प्रियंका देवी ने महिलाओं एवं ग्रामीणों को बाल विवाह मुक्त भारत की शपथ दिलाई। महिलाओं ने मोमबत्तियां जलाकर बाल विवाह के खिलाफ एकजुट होकर कार्य करने और गांव को इस सामाजिक कुरीति से मुक्त बनाने का संकल्प लिया।

30 नवंबर से गांवों में पहुंचेगा बाल विवाह मुक्ति रथ

दिशा आर.सी.डी. समाजसेवी संस्था के जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन परियोजना अधिकारी कुशाल सिंह रावत ने बताया कि 30 नवंबर को जिला कलक्टर एवं अन्य अधिकारियों द्वारा बाल विवाह मुक्ति रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा। यह रथ जिले के विभिन्न गांवों में पहुंचकर बाल विवाह के दुष्परिणामों, कानूनी प्रावधानों और इसकी रोकथाम में समुदाय की भूमिका को लेकर जागरूकता फैलाएगा। कार्यक्रम में बाल अधिकारिता विभाग के नीरज मेघवंशी, हर्ष जेडिया, विजेश देवाशी तथा संस्था के भीम सिंह, अर्चना, वीनस, लक्ष्मण सिंह, अमिता एवं बबली सहित अन्य उपस्थित रहे।

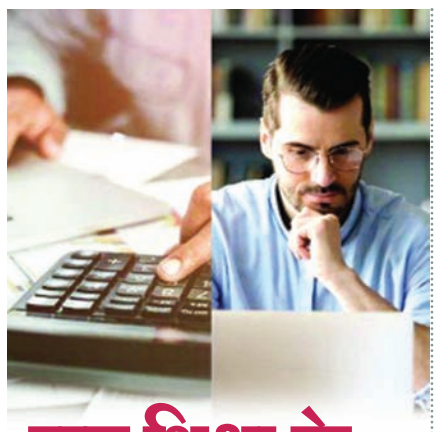

उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने के इच्छुक विद्यार्थी फोकस्ड तैयारी करें

उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए जरूरी है कि वे इसके लिए फोकस्ड तैयारी करें। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए जरूरी है कि वे इसके लिए फोकस्ड तैयारी करें। इस बारे में यहां उपयोगी सलाह दे रही हैं आदित्य बिड़ला वर्ल्ड अकेडमी की हेड करियर गाइडेंस काउंसलर।

विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी के बारे में सोचना कब से शुरू कर देना चाहिए?

आठवीं से ही। हम उनसे कहते हैं कि वे अपने करियर के बारे में सोचना और उस पर काम करना शुरू कर दें। कौन-से विषय वहां तक पहुंचने में आपकी मदद करेंगे, कौन-से कॉलेज में पढ़ाई करनी है, ये सारे फैसले बाद में लेने होंगे। यह जरूरी नहीं कि आप विदेशी यूनिवर्सिटीज की ओर ही देखें। भारत में भी बेहतरीन यूनिवर्सिटीज हैं। जरूरी यह है कि आप फोकस्ड रहें।

क्या एक साल का गैप लेना ठीक है, जो आजकल ट्रैंड बनता जा रहा है?

गैप ईयर का परसेप्शन बदल रहा है। महत्वपूर्ण यह है कि कोई विद्यार्थी कैसे साल बिताता है। गैप लेने के बाद जिनकी एप्लिशन स्ट्रॉन्ग होती है, वे अकेडेमिकली भी स्ट्रॉन्ग होते हैं। अपने सफर के दौरान वे कई तरह की इंटर्नशिप भी करते रहते हैं। यूनिवर्सिटीज भी यही देखती हैं। वे जानना चाहती हैं कि विद्यार्थी कैसे अपने समुदाय को सशक्त बनाते हैं।

इंटर्नशिप कितनी जरूरी है?

समर इंटर्नशिप करियर के बारे में आपका नजरिया बदल सकती है। मैं एक उदाहरण देना चाहूंगी। एक छात्रा ने हमसे कहा कि आर्ट और कलर उसकी जिंदगी है। वह आर्टिस्ट बनना चाहती थी लेकिन स्टूडियो में इंटर्नशिप के दौरान उसे एहसास हुआ कि वह मार्केट और आर्ट की सेल के बारे में कहीं अधिक इच्छुक थी। इसलिए आखिर में उसने मैनेजमेंट कोर्स जॉइन कर लिया।

सही यूनिवर्सिटी का चुनाव कैसे करना चाहिए?

सही चॉइस ही आपको सही नौकरी, सही करियर, सही माहौल और यहां तक कि सही पार्टनर तक पहुंचाती है। इसलिए तमाम संभावनाओं पर विचार करने के बाद ही तय करें कि आप सबसे अधिक कहां फिट बैठते हैं। भारत में पैरेंट्स अपनी आय का 70 प्रतिशत हिस्सा बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते हैं। मगर जब कोई स्टूडेंट चार साल यूनिवर्सिटी में बिताता है, तो हमें खुद से सवाल पूछना होगा कि क्या वह वहां खुश है!

स्टेटमेंट ऑफ पर्पज (एसओपी) में यूनिवर्सिटी क्या देखती है?

एसओपी में यूनिवर्सिटी आपके बारे में ज्यादा जांचना चाहती है। ऐसा अमेरिका व ब्रिटेन की यूनिवर्सिटीज में खास तौर पर होता है। मैं सलाह देती हूं कि एसओपी खुद तैयार करें। इसके लिए किसी और को हायर न करें।



अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने का मौका देगा एयरोस्पेस इंजीनियरिंग

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग आपको अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने के साथ आपके सपनों को साकार करने का मौका देगा। इस क्षेत्र में एयरोस्पेस इंजीनियर का मुख्य काम एयरक्राफ्ट, स्पेस क्राफ्ट, उपग्रह और मिसाइलों को डिजाइन करना है। साथ ही सभी डिजाइन का सही आकलन करने के लिए उनके प्रोटोटाइप का परीक्षण करते हैं। इसके अलावा ये निर्धारित योजनाओं के अनुकूल कार्य भी करते हैं।

अगर आप बचपन में आसमान में उड़ते प्लेन को देखकर उत्साहित हो जाते थे और अब भी नीले आसमान में उड़ान भरने के साथ अंतरिक्ष का सैर करना चाहते हैं तो एयरोस्पेस इंजीनियरिंग आपके लिए एकदम सही करियर विकल्प है। एयरोस्पेस इंजीनियरिंग आपको अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने के साथ आपके सपनों को साकार करने का मौका देगा। इस क्षेत्र में एयरोस्पेस इंजीनियर का मुख्य काम एयरक्राफ्ट, स्पेस क्राफ्ट, उपग्रह और मिसाइलों को डिजाइन करना है। साथ ही सभी डिजाइन का सही आकलन करने के लिए उनके प्रोटोटाइप का परीक्षण करते हैं। इसके अलावा ये निर्धारित योजनाओं के अनुकूल कार्य भी करते हैं।
इन कार्यों के अलावा इस क्षेत्र में कार्य करने वाले इंजीनियर एयर क्राफ्ट की ताकत उसकी क्षमता, विश्वसनीयता और विमान तथा उसके अन्य पार्ट्स का लम्बे समय तक टिकाऊ बने रहने के लिए ध्वंसात्मक तथा गैर ध्वंसात्मक परीक्षण की दिशा में कार्य कर सकते हैं या फिर कार्य करने के लिए निर्देश दे सकते हैं।

एयरोस्पेस इंजीनियर का कार्य

इस क्षेत्र में एयरोस्पेस इंजीनियर का कार्य स्पेसक्राफ्ट, डिफेंस सिस्टम और एविएशन और एविओनिक्स में इस्तेमाल होने वाली नई इंजीनियरिंग तकनीकों को तैयार करना है। इसके अलावा एक एयरोस्पेस इंजीनियर वायुगतिकीय द्रव प्रवाह जैसे क्षेत्रों में कुशल होता है। जैसे- संरचनात्मक डिजाइनय मार्गदर्शन, नेविगेशन और नियंत्रण इंस्ट्रूमेंटेशन और संचार, रोबोटिक्स, या प्रणोदन और दहन आदि। साथ ही वे विभिन्न प्रकार के एयरोस्पेस मशीनरी को डिजाइन करने का प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए वाणिज्यिक विमान, हेलीकॉप्टर, युद्धक विमान अंतरिक्ष यान, उपग्रह, प्रक्षेपण वाहन, रॉकेट और मिसाइल।

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के लिए एजुकेशन

अगर आप एयरोस्पेस में इंजीनियरिंग करना चाहते हैं तो आपको न्यूनतम स्नातक की डिग्री यानी बीई या फिर बीटेक व बीएस या फिर किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से समकक्ष की आवश्यकता होती है। इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री उन उम्मीदवारों के लिए एक 4 वर्ष का कार्यक्रम है, जिन्होंने भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ कक्षा 12वीं की शिक्षा पूरी की है। टफ मैथ्य और कम्प्यूटेशनल फार्मुलों के साथ भौतिकी की गतिशीलता को समझना एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में स्नातक कार्यक्रम में दाखिला लेने के लिए कुछ आवश्यक लक्षण हैं। वहीं एमएसए एमटेक और पीएचडी आदि विश्वविद्यालयों जैसे स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए निबंध परीक्षा और व्यक्तित्व साक्षात्कार के बाद मानकीकृत परीक्षा में स्कोर करना जरूरी है।

क्रिएटिव थिंकिंग एबिलिटी

एक एयरोस्पेस इंजीनियर में क्रिएटिव थिंकिंग एबिलिटी होना चाहिए। सीधी बात कि उनमें यह सोचने में सक्षम होना चाहिए कि किन परिस्थितियों में डिजाइन, सामग्री और अंतिम उत्पाद या परियोजना विफल हो सकती है और एक गड़बड़ या विफलता के मामले में वैकल्पिक विकल्प क्या होने चाहिए।

टीम वर्कर

एक एयरोस्पेस इंजीनियर टीम में काम करता है, उसे काम के माहौल में सीखने और बनाने में सक्षम होने के लिए एक अच्छा टीम वर्कर होना चाहिए।

राइटिंग स्किल

एयरोस्पेस इंजीनियर के लिए यह बहुत जरूरी स्किल है कि उनके अंदर स्पष्ट लेखन के लिए अच्छा लेखन कौशल होना चाहिए और ऐसे डिजाइन बनाने चाहिए जो अन्य टीम के कार्यकर्ता पूरी तरह से समझ सकें।

एनालिटिकल स्किल

एयरोस्पेस मशीन के साथ विभिन्न वातावरणों के विकल्पों का सुझाव देने के लिए एयरोस्पेस मशीन और उसके डिजाइन की कार्य परिस्थितियों को समझने के लिए साउंड एनालिटिकल स्किल होने चाहिए।

बिजनेस स्किल

एयरोस्पेस इंजीनियर को यह पता होना जरूरी है कि वो जिस परियोजना में लगे हैं, उसकी लागत क्या होगी और कंपनी या सरकार को फायदा कैसे मिलेगा। क्योंकि सभी तरह के फायदे के लिए रूपरेख एयरोस्पेस इंजीनियर को बनानी पड़ती है।









रिसर्च कंपनियों, रक्षा मंत्रालय, हेलीकाप्टर कंपनियों, विमानन कंपनियों में मिल सकती है जॉब

अगर आप एयरोस्पेस इंजीनियरिंग करना चाहते हैं तो आपको एयरलाइंस के अलावा वायु सेना, कॉर्पोरेट रिसर्च कंपनियों, रक्षा मंत्रालय, हेलीकाप्टर कंपनियों, विमानन कंपनियों में जॉब मिल सकती है। भारत के अंदर इस क्षेत्र में प्रमुख भर्ती करने वालों में से कुछ हैं हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयोगशालाएं, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, नागरिक उड्डयन विभाग, एयर इंडिया, भारत अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन व अन्य।

एयरोस्पेस इंजीनियर कहां काम करते हैं

इंजीनियर ज्यादातर सरकारी एजेंसियों और मेन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्रीज में काम करते हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ चुनिंदा एयरोस्पेस इंजीनियरों को नासा जैसे अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर काम करने के लिए भी चुना जाता है। वर्तमान में एयरोस्पेस इंजीनियर एयरोडायनेमिक्स के बेसिक कॉन्सेप्ट पर काम कर रहे हैं। साथ ही इनके पास एयरक्राफ्ट पावर प्लांट जैसे टर्बो प्रोप, पिस्टन इंजन और जेट्स के कामकाज के विषय में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। कुछ एयरोस्पेस इंजीनियर राष्ट्रीय रक्षा से संबंधित परियोजनाओं पर काम करते हैं और इसके लिए उन्हें सुरक्षा मंजूरी प्राप्त करनी पड़ती है।

जॉब के अवसर

इस क्षेत्र में जॉब के लिए आपके पास कम से कम इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन डिग्री होना आवश्यक है। कई ऐसे एम्प्लॉयर जो विशेष रूप से जो इंजीनियरिंग कंसल्टिंग सर्विसेज प्रदान करते हैं, उन्हें एक सर्टिफाईड इंजीनियर की आवश्यकता होती है। इस समय देश में निम्नलिखित संगठन जॉब दे रहे हैं।

- एयर फोर्स
- सरकारी अनुसंधान
- कॉर्पोरेट अनुसंधान
- हेलीकॉप्टर कंपनियां
- एयरलाइंस
- एयरशिप्स
- विमानन कंपनियां
- मिसाइल
- फिक्स्ड विंग एयरक्राफ्ट
- रक्षा मंत्रालय
- उपग्रह
- अंतरिक्ष यान



सकारात्मकता को चुनते हैं देश और दुनिया के युवा

जीवन के और हमारे मन के भी दो पहलू होते हैं। हम या तो सकारात्मक होते हैं या नकारात्मक। यदि हम सकारात्मक होना चुनते हैं, तो यह आशा और आत्मविश्वास जगाता है। हम खुद पर भरोसा करना सीख लेते हैं। हम स्वप्रेरित होते हैं और दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन जाते हैं। देश और दुनिया के युवा लीडर्स इन्हीं बातों पर जोर देते हैं।

जानी-मानी फैशन स्टाइलिस्ट हैं अमी पटेल। वे काजोल, लारा दत्ता, आलिया भट्ट, अक्षय कुमार और ऐसे ही कई दिग्गज बॉलीवुड स्टार्स के फैशन, उनके स्टाइल को मेंटेन रखने का काम करती हैं। उनके मुताबिक, स्टाइल फीका है यदि आपकी बॉडी लैंग्वेज, आपका चेहरा साथ नहीं दे रहा। यदि आप खुद अव्यवस्थित या कंफ्यूज रहते हैं, तो फैशन से इसे बदलना मुश्किल है। विचार आपका आईना हैं, यह ध्यान रखें। फिर आप जो भी पहनेंगे, लोग देखते रह जाएंगे। अमी खुद एक मेडिटेशन टीचर भी हैं और सोच को सकारात्मक बनाए रखने के लिए इसे बहुत जरूरी मानती हैं। उनके मुताबिक, हमें वह सब करना चाहिए, जिसकी वजह से हमारी सकारात्मक सोच को बनाए रखने में मदद मिल सके।

सीखने की ललक

जस्ट डायल के सीईओ वीएसएस मणि की सक्सेस स्टोरी भी कुछ इसी तरह की है। इसका सार यह है कि यदि आप विपरीत परिस्थिति में भी अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखने में सक्षम होते हैं, तो आपकी मंजिल ज्यादा दूर नहीं। वे कहते हैं, जब मैंने इस बिजनेस आइडिया के बारे में सोचा था, तो भारत में इंटरनेट का इतना प्रभाव नहीं था। एक तो मुश्किल आइडिया, उस पर घर की माली हालत खराब। काम शुरू करना है, तो पैसा चाहिए ही, सो मैंने दूसरे कामों के साथ जुड़कर घर की जिम्मेदारी भी संभाली और अपने बिजनेस आइडिया पर भी चुपचाप काम करता रहा। मणि आज भी अपने बिजनेस को 20 साल पुराना स्टार्ट-अप ही कहते हैं। उनके अनुसार, इससे सीखने की ललक बनी रहती है। जब तक यह इच्छा रहेगी, आपकी सोच भी सकारात्मक रहेगी। सकारात्मक लोग हमेशा कुछ-न-कुछ करते-सीखते रहते हैं।

समस्याओं से न भागें

मुझसे लोग हमेशा पूछते हैं कि आप तमाम जिम्मेदारियों से उपजे स्ट्रेस के बीच कुंठित क्यों नहीं होते, गुस्सा क्यों नहीं आता? मेरा जवाब होता है, आप इसके अलावा यह भी तो कह सकते हैं कि आप कितने पॉजिटिव हैं! यह कहना है ब्रैंडन वैलेस का। वे अमेरिकी सरकार में पॉलिसी एडवाइजर के तौर पर कार्यरत हैं। अपनी सरकारी जिम्मेदारियों के अलावा, वे युवाओं से जुड़े मसलों पर भी सक्रिय हैं। खास तौर पर इस दिशा में कि युवाओं को शांति और सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए।
वे कहते हैं, कोई समस्या आपके सामने आती है, तो दो ही विकल्प होते हैं आपके पास। या तो आप समस्याओं से जूझें, दुख-दर्द का अनुभव करें या फिर इन सबका पूर्वानुमान लगाकर पलायन कर जाएं। मैं दर्द लेता हूं क्योंकि यह हमें अंतत- स्थिर करता है। हममें ठहराव लाता है और इस ठहराव का चयन हमेशा सकारात्मक मिजाज का व्यक्ति ही कर सकता है।

फोकस खुद पर

जिनकी सोच सकारात्मक होती है, वे हमेशा अपनी गलतियों की तरफ देखते हैं। उनमें सुधार के बारे में चिंतन करते हैं। वे रुकी हुई घड़ी को भी देखकर यह कहना जानते हैं कि देखो, यह घड़ी नहीं चल रही लेकिन यह रोज दो बार सही वक्त बता पाने में सक्षम है। ब्रिटेन की अभिनेत्री फागुन ठकरार बचपन से अभिनेत्री बनना चाहती थीं, पर उनके पैरेंट्स की इच्छा थी कि वे डॉक्टर बनें। वे डॉक्टर बनीं भी, मगर बाद में कड़ी मेहनत करते हुए उन्होंने अपना सपना भी पूरा किया। आज वे डॉक्टर ही नहीं, एक्टर, डायरेक्टर, राइटर और फैशन डिजाइनर भी हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी फागुन कहती हैं, मैं इस बात की परवाह नहीं करती कि लोग क्या सोचेंगे। मैं हमेशा इसका ध्यान रखती हूं कि मैं अपना बेस्ट दे सकूं। अपने काम के दौरान मैंने बहुत सारी मुश्किलें झेली हैं। लीक से हटकर सोचना और करना आसान नहीं, लेकिन मेरे पास जादू की छड़ी है और वह है सकारात्मक सोच।



38 साल के WWE सुपरस्टार ब्रॉनसन रीड का निधन

● सऊदी अरब में हुए क्राउन ज्वेल इवेंट के दौरान हुए थे चोटिल ● ब्रॉनसन रीड अपने पीछे पत्नी पैज और एक बेटी को छोड़ गए हैं

नई दिल्ली, एजेंसी। रेसलिंग की दुनिया से एक बेहद दुखद खबर सामने आई है। स्टार रेसलर ब्रॉनसन रीड का 38 साल की उम्र में निधन हो गया है। उनका असली नाम जर्मेन हेली था। 2019 में उन्होंने WWE में डेब्यू किया था। वह ब्रॉन ब्रेकर, लोगन पॉल, ऑस्टिन थ्योरी और मैक्सिन डुप्री के साथ द विजन टीम का हिस्सा थे।

- **WWE ने बताई निधन की वजह-** WWE ने बयान जारी करके ब्रॉनसन रीड के निधन के बारे में जानकारी दी। कंपनी ने बयान में कहा- यह बताते हुए गहरा दुख हो रहा है कि जर्मेन हेली, जिनका नाम ब्रॉनसन रीड भी था, का आज 38 की उम्र में मेडिकल कॉम्प्लिकेशन के कारण निधन हो गया है।
- **क्राउन ज्वेल में रीड को लगी थी चोट-** ब्रॉनसन रीड इसी महीने सऊदी अरब में हुए क्राउन ज्वेल इवेंट के दौरान चोटिल हुए थे। ओबा फेमी के खिलाफ मुकाबले में उन्हें टेबल पर पटक दिया गया था। इस घटना में उनकी पसलियां टूट गई थीं और किडनी भी चोटिल हो गई थी। ब्रॉनसन रीड अपने पीछे पत्नी पैज और एक बेटी को छोड़ गए हैं। पैज के साथ स्कूल से ही उनकी दोस्ती थी। अभी उनकी पत्नी गर्भवती है और इसी दौरान रीड ने दुनिया को अलविदा कह दिया है।
- **2007 में रीड का रेसलिंग डेब्यू हुआ था-** रीड का जन्म ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड में हुआ था। अपने बचपन के दौरान उन्होंने कई तरह के खेल खेले, जिनमें ऑस्ट्रेलियन रूल्स फुटबॉल, सॉकर, रग्बी और बास्केटबॉल शामिल थे। 2007 में उन्होंने रेसलिंग डेब्यू किया था।



आंद्रे द जायंट मेमोरियल बैटल रॉयल जीत चुके

आंद्रे द जायंट मेमोरियल बैटल रॉयल जीत चुके ब्रॉनसन रीड WWE के ताकतवर रेसलर्स में गिने जाते थे। रिंग में अपनी दमदार बॉडी और आक्रामक अंदाज के लिए उनकी अलग पहचान थी। वह एक बार ह्वङ्ख नॉर्थ अमेरिकन चैंपियन बने थे। इसके अलावा 2024 में उन्होंने आंद्रे द जायंट मेमोरियल बैटल रॉयल का खिताब भी अपने नाम किया था।

ऋषभ पंत ने रचा नया इतिहास...

WTC में बनाया छक्कों का महारिकॉर्ड, बेन स्टोक्स पीछे छूटे

क्राइस्टचर्च, एजेंसी। क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल में भारत और न्यूजीलैंड के बीच टेस्ट सीरीज का दूसरा एवं आखिरी मुकाबला खेला जा रहा है. इस मुकाबले में ऋषभ पंत से धमाकेदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन उन्होंने भारत की पहली पारी में निराश किया. पंत ने 1 चौके और 1 छक्के की मदद से 39 गेंदों पर 23 रन बनाए. पंत बड़ा शॉट मारने के चक्कर में जैकब डफी की गेंद पर काइल जेमिसन के हाथों लपके गए. हालांकि इस छोटी सी पारी के दौरान ऋषभ पंत ने



WTC में सबसे ज़्यादा छक्के

ऋषभ पंत (भारत)	89
बेन स्टोक्स (इंग्लैंड)	88
रोहित शर्मा (भारत)	56
शुभमन गिल (भारत)	48
यशस्वी जायसवाल (भारत)	45

वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप में एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है. उन्होंने इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर बेन स्टोक्स को पीछे छोड़ते हुए डब्ल्यूटीसी के इतिहास में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया. ऋषभ पंत के नाम अब वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप में 89 छक्के हो गए हैं. इससे पहले यह रिकॉर्ड बेन स्टोक्स के पास था, जिन्होंने इस टूर्नामेंट में 88 छक्के लगाए थे. पंत ने एक छक्का अधिक लगाकर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान को पीछे छोड़ दिया और इस खास सूची में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया.

आईएसएल

ट्रिजॉय डायस का गोल, चर्चिल ब्रदर्स ने इंटर काशी को 1-0 से हराया

पुणे, एजेंसी। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2026-27 के 35वें मुकाबले में, चर्चिल ब्रदर्स एससी ने इंटर काशी को 1-0 से हराकर अपनी लगातार चार हार के सिलसिले को खत्म किया। एक कड़े मुकाबले में सब्स्टिट्यूट खिलाड़ी ट्रिजॉय डायस (53वें मिनट) ने विजयी गोल दागा। इस जीत के साथ 'रेड मशीन्स' ने मौजूदा सीजन में अपनी पहली 'अवे' (घर से बाहर) जीत दर्ज की। 'रेड मशीन्स' 6 मैचों में 6 अंकों के साथ अंक तालिका में नौवें स्थान पर पहुंच गई है, जबकि इंटर



काशी 1 अंक के साथ सबसे निचले पायदान पर बनी हुई है। शुक्रवार को पुणे के श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले गए मैच के पहले हाफ में चर्चिल ब्रदर्स के पास गेंद पर ज्यादा नियंत्रण (पजेशन) रहा, लेकिन वे मौके बनाने में संघर्ष करते दिखे। वहीं, इंटर काशी के खेल में भी आक्रामक धार की कमी दिखी। मैच की शुरुआत में डिफेंडर जोसेफ ओकोरो ने कुछ अहम बचाव करते हुए आयुष छिकारा और थोई सिंह को गोल करने से रोका। यह मुकाबला काफी तेज गति और शारीरिक जोर-आजमाइश वाला रहा। एक मौके पर बोगदान मैंडिच से टकराने के बाद वेन वाज को सिर में चोट लग गई, जिसके इलाज में काफी समय लगा।

क्राइस्टचर्च टेस्ट : दूसरा दिन

बैकफुट पर टीम इंडिया

● दूसरे दिन 6 विकेट धड़ाम, कीवी तेज गेंदबाजों का कहर



नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और न्यूजीलैंड के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का आखिरी मुकाबला क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल में खेला जा रहा है. मुकाबले में दूसरे दिन (28 नवंबर) स्टम्प तक भारत ने अपनी पहली पारी में 6 विकेट पर 116 रन बना लिए. ध्रुव जुरेल 7 रन बनाकर नॉटआउट हैं. भारत पहली पारी के आधार पर कीवी टीम से अब भी 240 रन पीछे है. न्यूजीलैंड की टीम पहली पारी में 356 रन बनाकर आउट हो गई. आकाश दीप ने 99 रन देकर पांच विकेट हासिल किए. मुकाबले में टॉस भारतीय टीम ने जीता था और पहले गेंदबाजी का निर्णय लिया था. दोनों टीमों के बीच टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला वेलिंगटन के बेसिन रिजर्व में खेला गया था, जो ड्रॉ पर छूटा. अब ये मुकाबला काफी अहम है.

भारत की पहली पारी की हाइलाइट्स

भारत की पहली पारी में बेहद खराब शुरुआत रही. मैट हेनरी ने भारत की पारी के पहले ही ओवर में यशस्वी जायसवाल (0) को निपटा दिया. इसके बाद नंबर 3 पर आए देवदत्त पडिक्कल ने 20 गेंदों पर तेज 21 रन बनाए. लेकिन वो विकेटकीपर टॉम ब्लंडेल को काइल जेमिसन की गेंद पर कैच थमा बैठे. भारतीय कप्तान शुभमन गिल भी कुछ खास नहीं कर सके और 17 रन बनाकर चायकाल से कुछ पहले आउट हो गए. विकेटकीपर बैटर ऋषभ पंत का प्रदर्शन भी कुछ खास नहीं रहा. पंत क्रीज पर नजरें जमाने के बाद 23 रनों के निजी स्कोर पर जैकब डफी का शिकार बने. जैकब डफी ने फिर केएल राहुल (25 रन) के रूप में भारतीय टीम को पांचवां झटका दिया. फिर दूसरे दिन के खेल में अंतिम गेंद पर वॉशिंगटन सुंदर (10 रन) चलते बने.

रोहित शर्मा फिर बने मुंबई इंडियंस के कप्तान, बोले-

मैं पूरी तरह तैयार हूं



मुंबई, एजेंसी। अनुभवी बल्लेबाज रोहित शर्मा को शुक्रवार को, इंडियन प्रीमियर लीग के 2027 सीजन से पहले, तीन साल के अंतराल के बाद फिर से मुंबई इंडियंस का कप्तान बना दिया गया है। रोहित, जिनकी कप्तानी में मुंबई ने 5 बार ङ्घक्कर का खिताब जीता है, अब हार्दिक पांड्या की जगह लेंगे। हार्दिक पांड्या एक ट्रेड (खिलाड़ियों के आदान-प्रदान) के ज़रिए पंजाब किंग्स में चले गए हैं, जिसमें तेज़ गेंदबाज़ अर्शदीप सिंह भी शामिल हैं। मुंबई इंडियंस की ओर से जारी एक बयान में रोहित ने कहा,



'मैं ङ्घक्कर के 20वें सीज़न के लिए तैयार हूं। आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने और अपने फैंस को जश्न मनाने के कई मौके देने के लिए मैं पूरी तरह तैयार हूं। हमारा पूरा ध्यान अपने अंदाज में क्रिकेट खेलने, एक टीम के रूप में प्रतिस्पर्धा करने और खेल का आनंद लेने पर होगा।' रोहित, जो 2013 में मुंबई इंडियंस के कप्तान बने थे, उन्हें ङ्घक्कर 2023 के बाद कप्तानी से हटा दिया गया था और उनकी जगह हार्दिक पांड्या को कप्तान बनाया गया था। रोहित की कप्तानी में मुंबई ने 2013, 2015, 2017, 2019 और 2020 में ङ्घक्कर का खिताब जीता था। 2020 में ट्रॉफ़ी जीतने के बाद, मुंबई का प्रदर्शन लीग में काफ़ी खराब रहा। टीम 2021 में 5वें और 2022 में 10वें स्थान पर रही, जबकि 2023 में वे क्वालिफ़ायर 2 से बाहर हो गए। इन नतीजों के बाद मुंबई इंडियंस के मैनेजमेंट ने कप्तान बदलने का फ़ैसला किया। हालांकि, हार्दिक पांड्या की कप्तानी में भी मुंबई का प्रदर्शन बेहतर नहीं रहा; टीम 2024 में 10वें और 2026 में 9वें स्थान पर रही। 2025 में, टीम क्वालिफ़ायर 2 तक तो पहुँची, लेकिन फिर बाहर हो गई।

फुटबॉल

यूरो 2016 में इंग्लैंड को हराने वाली आइसलैंड टीम के इंगवार जोनसन का निधन, 37 की उम्र में ली अंतिम सांस

नई दिल्ली, एजेंसी। आइसलैंड के पूर्व गोलकीपर इंगवार जोनसन का 37 साल की उम्र में निधन हो गया। वह 2016 यूरोपीय चैंपियनशिप में आइसलैंड की टीम का हिस्सा थे, जिसने प्री-क्वार्टर फाइनल में इंग्लैंड को 2-1 से हराकर बड़ा उलटफेर किया था। आइसलैंड फुटबॉल टीम के पूर्व गोलकीपर इंगवार जोनसन का 37 साल की उम्र में निधन हो गया। वह 2016 में हुए यूरोपीय फुटबॉल चैंपियनशिप (यूरो 2016) में आइसलैंड की टीम का हिस्सा थे। इसी टूर्नामेंट में आइसलैंड ने प्री-क्वार्टर फाइनल में इंग्लैंड को हराकर बड़ा उलटफेर किया था। जोनसन के निधन की जानकारी उनके पूर्व क्लब विकिंगुर ने गुरुवार को दी।



न्यूजीलैंड से टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम का ऐलान

नाथन लियोन और लाबुशेन बाहर

नई दिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड से 4 मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए शनिवार (28 नवंबर) को टीम का ऐलान कर दिया। दिग्गज स्पिनर नाथन लियोन और मार्नस लाबुशेन को बाहर कर दिया गया है। जैक क्लेटन और कोरी रोकिचिओली को 13 सदस्यीय टीम में पहली बार टेस्ट के लिए चुना गया है। क्वींसलैंड के बल्लेबाज क्लेटन को शेफील्ड शील्ड में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने का इनाम मिला है, जबकि वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के स्पिनर रोकिचिओली को घरेलू क्रिकेट और ऑस्ट्रेलिया ए के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन करने की बदौलत पैट कमिंस की कप्तानी वाली इस टीम में जगह मिली है। 27 वर्षीय बाएं हाथ के बल्लेबाज क्लेटन ने फर्स्ट-क्लास क्रिकेट में 40.17 के औसत से 2732 रन बनाए हैं, जिसमें सात शतक और 16 अर्धशतक शामिल हैं।

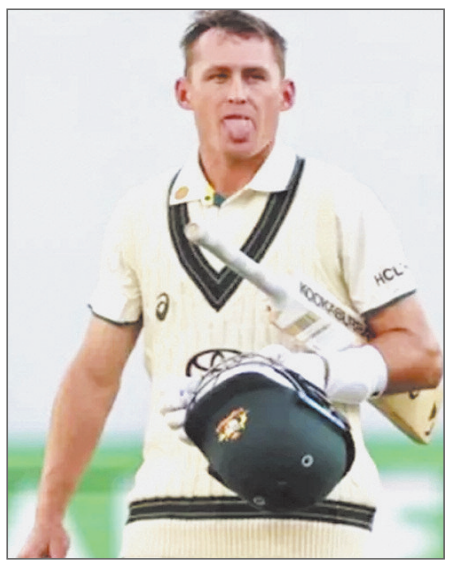

ब्यू वेबस्टर, कूपर कोनोली और मैथ्यू कुह्नमैन भी बाहर

ऑस्ट्रेलिया की टीम में कई बदलाव देखने को मिले हैं। नाथन लियोन और मार्नस लाबुशेन के अलावा ब्यू वेबस्टर, कूपर कोनोली और मैथ्यू कुह्नमैन जैसे खिलाड़ी भी टीम में शामिल नहीं हैं। निक मैडिनसन और सैम हार्पर की भी वापसी नहीं हुई है। दक्षिण अफ्रीका में लाबुशेन के लिए सीरीज काफी मुश्किल रही। उन्होंने छह पारियों में 21.83 के औसत से कुल 131 रन बनाए, जिसमें उनका सर्वोच्च स्कोर 39 रहा।

ऑस्ट्रेलिया की टीम

पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, जैक क्लेटन, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंग्लिस, माइकल नेसर, मैथ्यू रेनशॉ, कोरी रोचिसिओली, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क।

29 नवंबर को 15 हजार से अधिक धावक लगाएंगे दौड़

जयपुर में वेदांता पिंक सिटी हाफ मैराथन का आगाज

जयपुर, एजेंसी। *पी.वी. सिंधु होंगी इंटरनेशनल इवेंट एंबेसडर, 'रन फॉर जीरो हंगर' के संदेश के साथ होगा 11वां संस्करण जयपुर। वेदांता पिंक सिटी हाफ मैराथन पावर्ड बाय फिनोवा कैपिटल का 11वां संस्करण है। इस प्रतिष्ठित आयोजन की दो दिवसीय बिब एक्सपो का शुभारंभ शुक्रवार को जयपुर के महाराजा कॉलेज मैदान में हुआ। आयोजन को लेकर शहर में उत्साह का माहौल है। मैराथन आगामी रविवार, 29 नवंबर को आयोजित की जाएगी। बिब एक्सपो का औपचारिक उद्घाटन कर्नल राकेश यादव, डायरेक्टर (स्पोर्ट्स), अनिल अग्रवाल फाउंडेशन; डॉ. भरत दवे, हेड (कॉरपोरेट अफेयर्स), हिंदुस्तान जिंक; एवं राहुल सिंह, असिस्टेंट एवीपी, फिनोवा कैपिटल द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।*

27 और 28 नवंबर को आयोजित हो रही इस दो दिवसीय एक्सपो में पंजीकृत प्रतिभागियों को अपनी रेस बिब प्राप्त करने, रेस से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल करने तथा मैराथन के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए आयोजित विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिल रहा है। इस प्रमुख आकर्षण दो बार की ओलंपिक पदक विजेता और भारत की प्रसिद्ध बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी. सिंधु का इंटरनेशनल इवेंट एंबेसडर के रूप में जुड़ना है।



वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों और कई देशों से धावकों के भाग लेने की उम्मीद है। मैराथन की तीनों श्रेणियों में कुल 15,000 से अधिक प्रतिभागियों के शामिल होने की संभावना है। इस वर्ष की मैराथन का एक उनकी सहभागिता से आयोजन को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलेगी और फिटनेस, खेल उत्कृष्टता तथा सक्रिय जीवनशैली का संदेश और मजबूत होगा। वेदांता पिंक सिटी हाफ मैराथन का 11वां संस्करण वेदांता की महत्वपूर्ण सामाजिक पहल RunForZeroHunger का संदेश भी लेकर आ रहा है। यह पहल वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल के उस संकल्प से प्रेरित है, जिसमें उनका सपना है कि कोई भी बच्चा भूखा न सोए। इस पहल के अंतर्गत वेदांता प्रत्येक किलोमीटर की दौड़ के बदले एक भोजन उपलब्ध कराने का संकल्प लेता है। इसके माध्यम से फिटनेस और खेल को भूख मिटाने तथा जरूरतमंदों की सहायता के व्यापक सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा जा रहा है। यह पहल अनिल अग्रवाल फाउंडेशन के माध्यम से संचालित की जा रही है।

AIMS से प्रमाणित वेदांता पिंक सिटी हाफ मैराथन में तीन श्रेणियां होंगी - 21.1 किलोमीटर हाफ मैराथन, 10 किलोमीटर कूल रन और 5 किलोमीटर ड्रीम रन। इन श्रेणियों के माध्यम से विभिन्न आयु वर्गों और फिटनेस स्तरों के लोगों को भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com